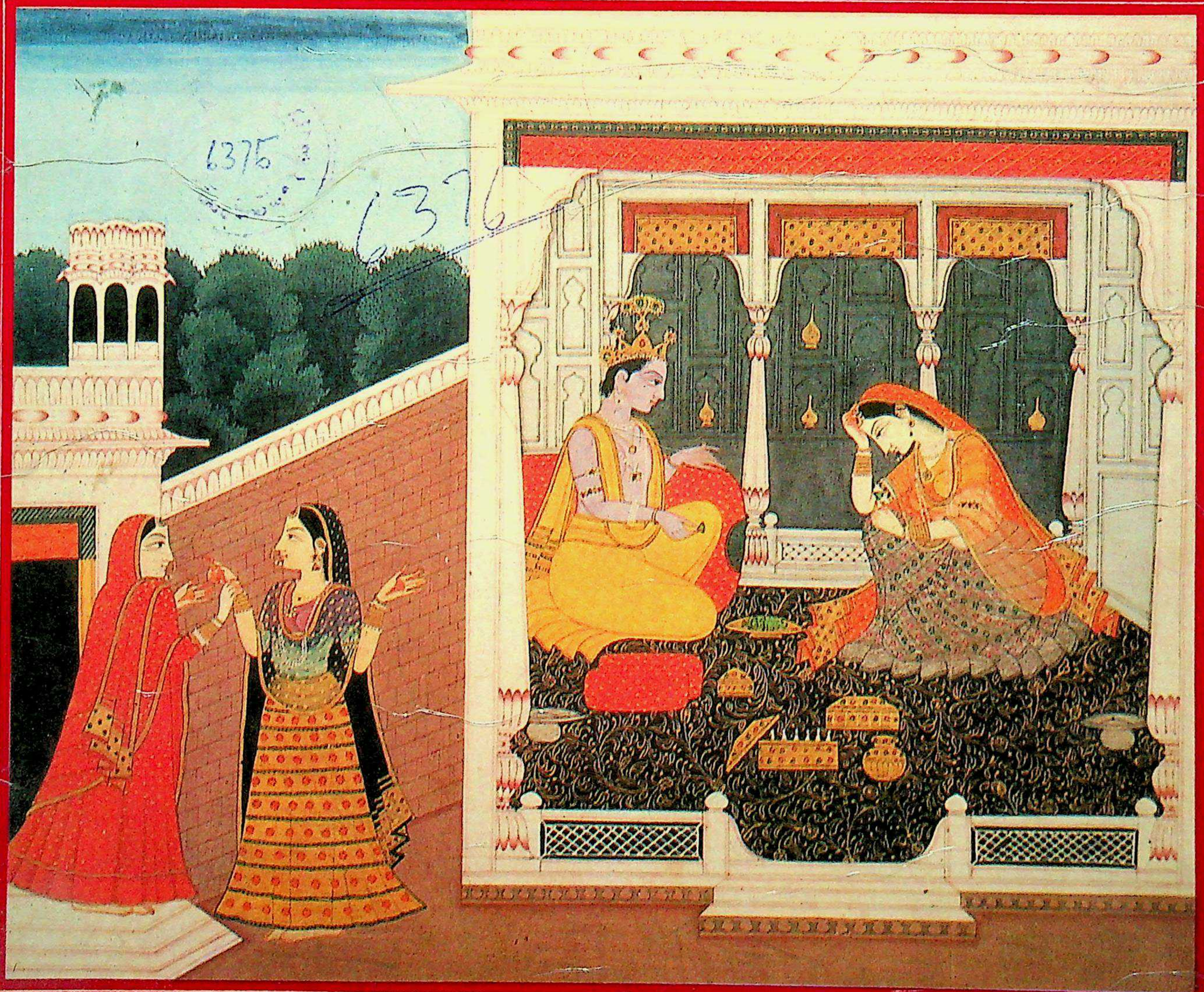
आचार्य केशवदास कृत

रसिकप्रिया



मूल्य - 250 रु.

आचार्य केशवदास कृत

रसिकप्रिया




State Museum
6376
Lucknow

आचार्य केशवदास कृत

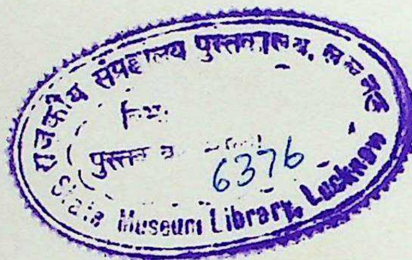
रसिकप्रिया

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

प्रथम संस्करण 1962
प्रथम पुनर्मुद्रण माघ 1915 (जनवरी 1994)

सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

ISBN 81-230-0053-7



रंगीन चित्र : 8

मूल्य : 250 रुपये

निदेशक. प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार
पटियाला हाउस नई दिल्ली-110001 द्वारा प्रकाशित

विक्रय केन्द्र • प्रकाशन विभाग

सुपर बाजार (दूसरी मंजिल) कनाट सर्कस नई दिल्ली-110001
कामर्स हाउस करीमभाई रोड बालार्ड पायर बम्बई-400038
8 एस्प्लेनेड ईस्ट कलकत्ता-700069
एल.एल.ए. आडीटोरियम 736 अन्नासलै मद्रास-600002
बिहार राज्य सहकारी बैंक बिल्डिंग अशोक राजपथ पटना-800004
निकट गवर्नमेंट प्रेस प्रेस रोड त्रिवेन्द्रम-695001
10-बी स्टेशन रोड लखनऊ-226019
राज्य पुरातत्वीय संग्रहालय बिल्डिंग पब्लिक गार्डन्स हैदराबाद-500004

वीरेन्द्रा प्रिन्टर्स 2216 हरध्यान सिंह रोड करोल बाग नई दिल्ली-110005 द्वारा मुद्रित ।

विषय-सूची

पहला प्रकाश

परिचय

एकरदन गजबदन, सदनबुधि, मदनकदनसुत ।
गौरिनंद आनंदकंद जगबंद, चंदजुत ।
सुखदायक दायक सुकीर्ति जगनायक-नायक ।
खलघायक घायक दरिद्र सब लायक-लायक ।
गुरु गुनअनंत भगवंत भव भगविवंत-भवभयहरन ।
जय केसवदास निवासनिधि लंबोदर असरनसरन ।१।

श्रीबृषभानुकुमारिहेत शृंगाररूप भय ।
बास हासरस हरे मातुबंधन करुनामय ।
केसी प्रति अति रौद्र बीर मार्‍यो बत्सासुर ।
भय दावानलपान पियो बीभत्स बकी उर ।
अति अद्‌भुत बंचि बिरंचिमति, सांत संततै सोच चित ।
कहि केसव सेवहु रसिकजन, नवरसमय ब्रजराज नित ।२।

नदी बेतवै-तीर जहँ, नीरथ तुंगारन्य ।
नगर ओछड़ो बहु बसै, धरनीतल में धन्य ।३।

आश्रम चारि बसे जहाँ, चारि बर्न सुभ कर्म ।
जप तप विद्या बेद-बिधि, सबै बढ़े धन धर्म ।४।

दिनप्रति जहँ दूनो लहै, जहाँ दया अरु दान ।
एक तहाँ केसव सुकबि, जानत सकल जहान ।५।

अपने अपने धर्म तहँ, सबै सदा सुखकारि ।
जासों देस बिदेस के, रहे सबै नृप हारि ।६।

रच्यो बिरंचि बिचारि तहँ, नृपमनि मधुकरसाहि ।
गहरवार कासीस-रबि, कुलमंडन जसु जाहि ।७।

ताको पुत्र प्रसिद्ध महिमंडन दूलहराम।
इंद्रजीत ताको अनुज, सकल धर्म को धाम ।८।

दीन्ही ताहि नृसिंहजू, तन मन रन जयसिद्धि ।
हित करि लच्छन-राम ज्यों, भई राज की बृद्धि ।९।

तिन कबि केसवदास सों, कीन्हों धर्मसनेहु ।
सब सुख दैकरि यों कह्यो, रसिकप्रिया करि देहु ।१०।

संबत सोरह सै बरष, बीते अठतालीस ।
कातिग सुदि तिथि सप्तमी, बार बरनि रजनीस ।११।

अति रति-गति मति एक करि, बिबिध-बिबेक-बिलास ।
रसिकन कों 'रसिकप्रिया', कीनी केशवदास ।१२।

ज्यों बिनु दीठि न सोभिजै, लोचन लोल बिसाल ।
त्यों ही केसव सकल कबि, बिन बानी न रसाल ।१३।

तातें रुचि सों सोचि पचि कीजै सरस कबित्त ।
केसव स्याम सुजान को, सुनत होइ बस चित्त ।१४।

शृंगार रस वर्णन

शृंगार रस की प्रधानता

प्रथम सिंगार सुहास्य रस, करुना रुद्र सु बीर ।
भय बीभत्स बखानिये, अद्‌भुत सांत सुधीर ।१।

नबहू रस के भाव बहु, तिनके भिन्न बिचार ।
सबको केसवदास हरि, नायक है सृंगार ।२।

शृंगार रस का लक्षण

रति-मति की अति चातुरी, रतिपति-मंत्र बिचार ।
ताही सों सब कहत हैं, कबि कोबिद शृंगार ।३।

शृंगार के भेद

सुभ संजोग बियोग पुनि, द्वै सिंगार की जाति ।
पुनि प्रच्छन्न प्रकास करि, दोऊ द्वै द्वै भाँति ।४।

प्रच्छन्न संयोग-वियोग का लक्षण

सो प्रच्छन्न संजोग अरु, कहैं बियोग प्रमान ।
जानें पीउ प्रिया की सखि, होइ जु तिनहि समान ।५।

प्रकाश संयोग-वियोग का लक्षण

सो प्रकास संजोग अरु, कहैं प्रकास बियोग ।
अपने अपने चित्त में, जानैं सिगरे लोग ।६।

प्रच्छन्न संयोग

बन में बृषभानुकुमारि मुरारि रमे रुचि सों रसरूप पियें ।
कल कूजत पूजत कामकला बिपरीत रची रति केलि कियें ।
मनि सोभित स्याम जराइ जरी अति चौकी चलै चल चारु हियें ।
मखतूल के झूल झुलावत केसव भानु मनो सनि अंक लियें ।७।

प्रकाश संयोग

केसव एक समै हरि-राधिका आसन एक लसैं रँगभीनें ।
आनँद सों तिय-आनन की दुति देखत दर्पन में दृग दीनें ।
भाल के लाल में बाल बिलोकि तहीं भरि लालन लोचन लीनें ।
सासन पीय सबायन सीय हुतासन में मनो आसन कीनें ।८।

प्रच्छन्न वियोग

कीट ज्यों काटत काननि कान्ह सों मानहूँ में कहि आवत ऊनो ।
ताहि चलें सुनिकै चुप ह्वै रहे नीकहिं केसव एक न दूनो ।
नेक अटें पट फूटति आँखि सु देखति हैं कब को ब्रज सूनो ।
काहे कों काहू को कीजै परेखो ब जीजै री जीव की नाक दै चूनो ।९।

जिनके मुख की दुति देखतहीं निस-बासर केसव दीठि अटी ।
पुनि प्रेम बढ़ावन की बतियाँ तजि आन कछू रसना न रटी ।
जिनके पद पानि उरोज सरोज हिये धरिकै पल नैन घटी ।
तिनके सँग छूटतहीं फट रे हिय तोहिं कहा न दरार फटी ।१०।

प्रकाश वियोग

सीतल समीर टारि चंद्रचंद्रिका निवारि,
केसौदास ऐसे ही तो हरषु हिरातु है ।
फूलन फैलाई डारि झारि डारि घनसारु,
चंदन कों ढारि चित्तु चौगुनो पिरातु है ।
नीरहीन मीन मुरझाइ जीवै नीर ही तें,
छीर छिरके तें कहा धीरजु धिरातु है।
पाई है तैं पीर कैधों यों ही उपचारु करै,
आगि को तौ डाढ्यो आँगु आगिहीं सिरातु है ।११।

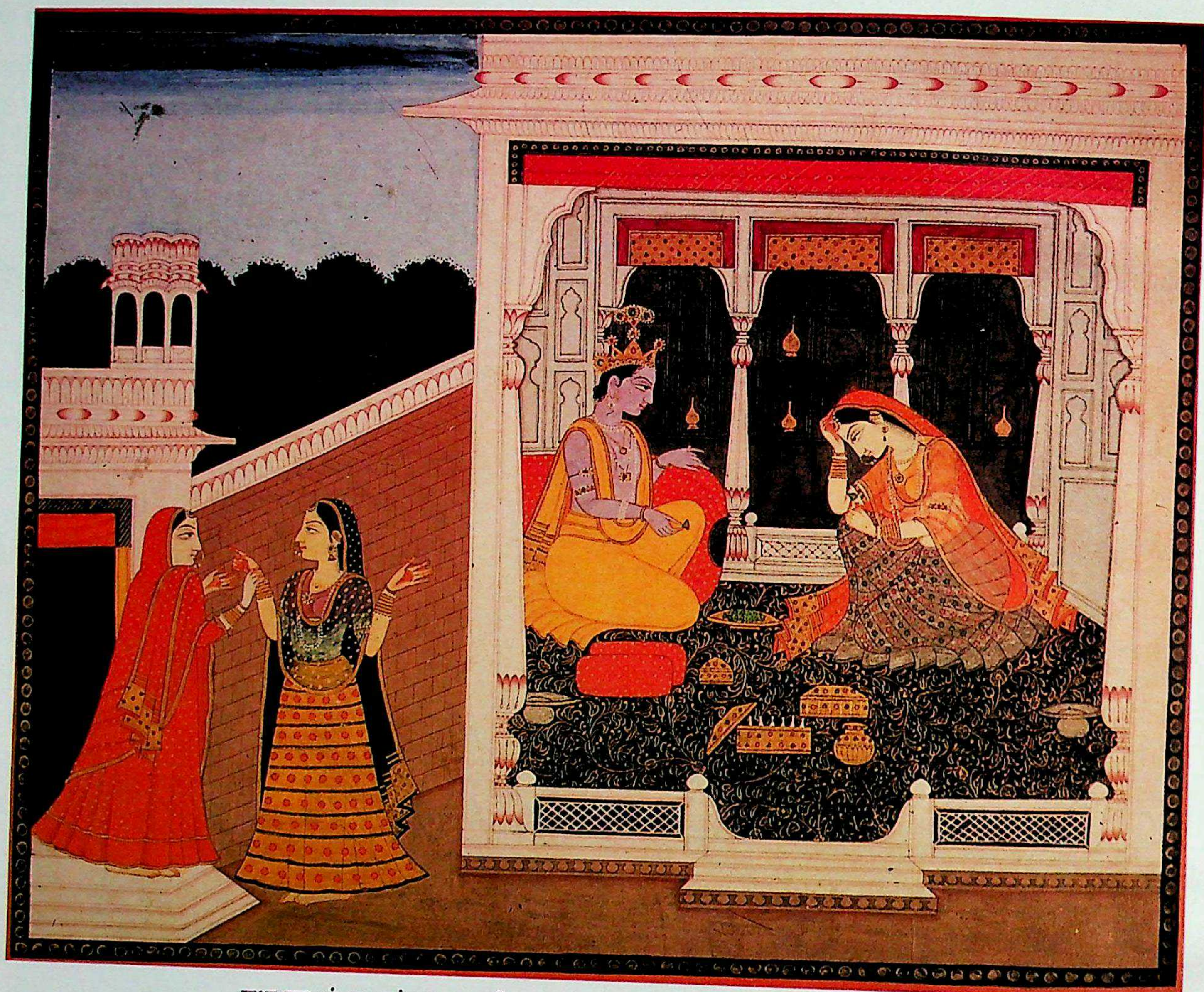
केसव रूठि रह्यो तुमहीं सों किधौं भय काहू के भीत भयो है ।
बेच्यो है काहू के हाथनि नाथ किधौं तुम काहू के साथ दयो है ।
मेरी सौं मो सहुँ भानहु बेगि इहाँ मनु नाहिं कहाँ पठयो है ।
साँची कहौ हरि हार्यो है काहू सों काहू हर्यो कि हिराइ गयो है ।१२।

बात कहैं न सुनैं कछु काहू त्यों हेरैं नहीं कोउ कैसेहूँ हेरो ।
खाइँ कछू न पियैं कछु केसौ छुवैं न कछू कर कोंरो करेरो ।
हूलि उठी ब्रज बैठी कहा उठि आबहु देखि कह्यो करि मेरो ।
जानै को माई कहा भयो कान्ह कों जोग-संजोग वियोग कि तेरो ।१३।

यों परछन्न प्रकास बिधि, बरने जोग बियोग ।
अब नायक-लच्छन कहौं, गूढ़ अगूढ़ प्रयोग ।१४।



राधा का श्रृंगार, कांगड़ा, पहाड़ी, लगभग 1790-95 ई०, राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली



राधा का श्रृंगार, कांगड़ा, पहाड़ी, लगभग 1800 ई०, राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

दूसरा प्रकाश

नायक वर्णन

लक्षण और भेद

अभिमानी त्यागी तरुन, कोककलानि प्रबीन ।
भव्य छमी सुंदर धनी, सुचिरुचि सदा कुलीन ।१।

ये गुन केसव जासु में, सोई नायक जानि ।
अनुकुल दछ सठ धृष्ट पुनि, चौबिधि ताहि बखानि ।२।

अनुकूल नायक

प्रीति करै निज नारि सों, परनारी-प्रतिकूल ।
केसव मन-बच-कर्म करि, सो कहिये अनुकूल ।३।

प्रच्छन्न अनुकूल

और के हास-बिलास न भावत साधुनि को यह सिद्ध सुभावै ।
बात वहै जु सदा निबहै हरि, कोऊ कहूँ कछु सोधु न पावै ।
आसन बास सुबासन भूषन केसव क्योंहूँ यहौ बनि आवै ।
मो बिन पान न खात जु कान्ह सु बैरु किधौं यह प्रीति कहावै ।४।

प्रकाश अनुकूल

केसव सूधे बिलोचन सूधी बिलोकनि कों अवलोकें सदाई ।
सूधियै बात सुने समुझें कहि आवति सूधियै बात सुहाई ।
सूधी सी हाँसी सुधानिधि सो मुख सोधि लई बसुधा की सुधाई ।
सूधे सुभाई सबै सजनी बस कैसें किये अति टेढ़े कन्हाई ।५।

मेरे तो नाहिन चंचल लोचन नाहिन केसव बानी सुधाई ।
जानौं न भूषन-भेद के भावनि भूलिहू मैं नहिं भौंह चढ़ाई ।
भोरेहूँ ना चितयो हरि ओर त्यों घैरु करै इहिं भाँति लुगाई ।
रंचक तौ चतुराई न चित्तहि कान्ह भए बस काहे तें माई ।६।

दक्षिण नायक

पहिले सो हिय हेतु डर, सहज बड़ाई कानि ।
चित्त चलेहूँ ना चलै, दच्छिन-लच्छन जानि ।७।

प्रच्छन्न दक्षिण

हरि से हितू सों भ्रम भूलिहू न कीजै मान,
हातो कियें हियहूँ तें होति हित हानियै ।
लोक में अलोक आनि नीकेहूँ कों लागतु है,
सीताजू कों दूत-गीत कैसे उर आनियै ।
आँखिनि जो देखियति सोई साँची केसौदास,
काननि की सुनी साँची कबहूँ न मानियै ।
गोकुल की कुलटा ये यौं ही उलटावति हैं,
आजु लौं तो बैसेई है कालि की न जानियै ।८।

प्रकाश दक्षिण

चित चोप चितैबे की तैसियै है अरु तैसियै भाँति डरात घनै ।
अरु तैसेई कोमल बोल गुपाल के मोहत हैं तिहिं भाँति मनै ।
गुन तैसेई, हास-बिलास सबै हुते तैसेई केसव कौन गनै ।
सखि तू कहै आन बधू के अधीन हैं सो परतीक किधौं सपनै ।९।

बहि-अंतर गूढ़-अगूढ़ निरंतर कामकला कुल कौन गनै ।
कहि केसव हास-बिलास सबै प्रतिद्यौस बढ़ें रसरीति सनै ।
जिनको जिय मेरेई जीव जियै सखि काय मनो बच प्रीति घनै ।
तिनकों कहैं आन बधू के अधीन हैं सो परतीक किधौं सपनै ।१०।

शठ नायक

मुँह मीठी बातैं कहै, निपट कपट जिय जानि ।
जाहि न डरु अपराध को, सठ करि ताहि बखानि ।११।

प्रच्छन्न शठ

रुचि पंकज चंदन बंदन कंचन रंच न रोचनहू की बची ।
कहिये किहिं कारन को इते लायक का पर भामिनि भौंह नची ।
अनुमानत हौं आँखियाँ लखि लाल ये नाहिंनै राति के रोष रची ।
तन तेरे बियोग तप्यो तरुनी तिहिं मानहुँ मो हिय माँह तची ।१२।

प्रकाश शठ

काननि के रँगे रंग नैननि के डोलौ संग,
नासा-अंग रसना के रसहीं समाने हौ ।
और गूढ़ कहा कहौं मूढ़ हौ जू? जानि जाहु,
प्रौढ़िरूढ़ केसौदास नीके करि जाने हौ ।
तन आन, मन आन, कपट-निधान कान्ह,
साँची कहौ मेरी आन काहे कौं डराने हौ ।

वे तो हैं बिकानी हाथ मेरें, हौं तिहारे हाथ,
तुम ब्रजनाथ हाथ कौन के बिकाने हौ? ।१३।

धृष्ट नायक

लाज न गारिहु मार की, छाँड़ि दई सब त्रास ।
देख्यौ दोष न मानही, धृष्ट सु कहियै तास ।१४।

प्रच्छन्न धृष्ट

नेह-भरे लै लै भाजत भाजन कौंन गनै दधि दूध मठाए ।
गारि दिये तें हँसैं बरजें घर आवत हैं जनु बोलि पठाए ।
लाज की और कहा कहौं केसव जे सुनिये ते सबै गुन ठाए ।
मामी पियै इनकी मेरी माइ को हैं हरि आठहुँ गाँठ अठाए ।१५।

प्रकाश धृष्ट लक्षण

मनसा बाचा कर्मना, बिहँसनि चितवनि लेखि ।
चलनि चातुरी आतुरी, आठौ गाँठ बिसेषि ।१६।

प्रकाश धृष्ट

सौंह को सोचु सकोचु न पांच को डोलत साहु भए करि चोरी ।
बैननि बंचकताई रची रति नैनन के सँग डोलत डोरी ।
लाज करै न डरै हित-हानि तें आनि अरे जिय जानिकै भोरी ।
नाहिनै केसव साख जिन्हैं बकिकै तिनसों दुखवै मुख को री ।१७।

बरने कबि-नायक सबै, नायक इहि अनुसार ।
सब-गुन-लायक नायिका, सुनि अब बहुत प्रकार ।१८।

तीसरा प्रकाश

नायिका वर्णन

जाति-अनुसार नायिका-भेद

प्रथम पद्मिनी चित्रिनी, जुवती जाति प्रमान ।
बहुरि संखिनी हस्तिनी, केसवदास बखान ।१।

पद्मिनी का लक्षण

सहज सुगंध सरुप सुभ, पुन्यप्रेम सुखदानि ।
तनु तनु भोजन रोष रति, निद्रा मान बखानि ।२।

सलज सुबुद्धि उदार मृदु, हास बास सुचि अंग ।
अमल अलोम अनंग-भुव, पदमिनि हाटक-रंग ।३।

उदाहरण

हँसत कहत बात फूल से झरत जात,
गूढ़ भूरि हाव-भाव कोक की सी कारिका ।
पन्नगी नगी-कुमारि आसुरी सुरी निहारि,
डारौं वारि किन्नरी नरी गँवारि नारिका ।
तापै हौं कहा ह्वै जाउँ बलि जाउँ केसौदास,
रची बिधि एक ब्रजलोचन की तारिका ।
भौंर से भँवत अभिलास लाख भाँति दिब्य,
चंपे की सी कली वृषभानु की कुमारिका ।४।

चित्रिणी का लक्षण

नृत्य गीत कबिता रुचै, अचल चित्त चल दृष्टि ।
बहिरति रति अति सुरत-जल, मुख सुगंध की सृष्टि ।५।

बिरल लोम तन मदन-गृह, भावत सकल सुबास ।
मित्र-चित्र-प्रिय चित्रिनी, जानहु केसौदास ।६।

उदाहरण

बोलिबो, बोलनि को सुनिबो, अवलोकनि कै अवलोकनि जोते ।
नाचिबो गाइबो बीन बजाइबो रीझि रिझाइ कों जानति तोते ।
राग बिरागनि के परिरंभन हास बिलासनि ते रति कोते ।
तौ मिलतौ हरि मित्रहि कों सखि ऐसें चरित्र जौ चित्र में होते ।७।

शंखिनी का लक्षण

कोपसील कोबिद-कपट, सजल सलोम-सरीर ।
अरुन-बसन नखदान-रुचि, निलज निसंक अधीर ।८।

छार-गंध-जुत मार-जल, तप्त भूरि भग होई ।
सुरतारति अति संखिनी, बरनत हैं सब कोई ।९।

उदाहरण

जातु नहीं कदली की गलीनि भली बिधि लै बदरी मुहँ लावै ।
चाहै न चंपकली की थली मलिनी नलिनी की दिसा नहिं धावै ।
जो कोउ केसव नाग-लवंगलता लवली-अललीनि चरावै ।
खारक-दाख खवाड़ मरौ कोउ ऊँटहि ऊँटकटारोई भावै ।१०।

हस्तिनी का लक्षण

थूल अंगुरी चरन मुख, अधर भृकुटि कटि बोल ।
मदन-सदन, रद कंधरा, मंद चालि चित लोल ।११।

स्वेद मदन-जल द्विरद-मद-गंधित भूरे केस ।
अति तीछन बहु लोम तन, भनि हस्तिनि इभ-भेस ।१२।

उदाहरण

सब देह भई दुरगंधमई मतिअंध दई सुख पावत कैसे ।
कछु साल तें लोम बिसाल से हैं स्रुतिताड़न केसव बोल अनैसे ।
अलि ज्यों मलिनी नलिनी तजिकै करिनी के कपोलनि मंडित तैसे ।
छिति छोड़िकै राजिसिरी बस पाप निरैपद राज बिराजत जैसे ।१३।

धर्मानुसार नायिका-भेद

ता नायक की नायिका, ग्रंथनि तीनि प्रमान ।
स्वकीया परकीया अवर, स्वकीया-परकीया न ।१४।

स्वकीया का लक्षण

संपति बिपति जो मरनहू, सदा एक अनुहारि ।
ताहि स्वकीया जानिये, मन-बच-कर्म बिचारि ।१५।

स्वकीया के भेद

मुग्धा, मध्या, प्रौढ़ गति, तिनकी तीनि बिचारि ।
एक एक की जानियहुँ, चारि चारि अनुहारि ।१६।

मुग्धा के भेद

नवलबधू नवजोबना, नवलअनंगा नाम ।
लज्जा लिये जु रति करै, लज्जाप्राय सु बाम ।१७।

नवलवधू मुग्धा

तासों मुग्धा नवबधू, कहत सयाने लोइ ।
दिन दिन दुति दूनी बढ़ै, बरनि कहै कबि कोइ ।१८।

उदाहरण

मोहिबो मोहन की गति को गतिही पढ़ी बैन कहा धौं पढ़ैगी ।
ओप उरोजनि की उपजें दिन, काइ मढ़ै अँगिया न मढ़ैगी ।
नैननि की गति गूढ़ चलाचल केसवदास अकास चढ़ैगी ।
माई, कहाँ यह माइगी दीपति जौ दिन द्वै इहि भाँति बढ़ैगी ।१९।

नवयौवना मुग्धा

सो नवजोबनभूषिता, मुगधा को यह बेस ।
बालदसा निकसै जहाँ, जोबन को परबेस ।२०।

उदाहरण

केसव फूलि नचीं भृकुटी कटि लूटि नितंब लई बहुकाली ।
बैननि सोच सँकोच सु नैननि छूटि गई गति की चल चाली ।
द्योसक धीर धरौ न धरौ अब लै तुमकों मिलिबो बनमाली ।
वाको अयान निकारन कौं उर आए हैं जोबन के अबिताली ।२१।

नवलअनंगा मुग्धा

नवलअनंगा होई सो, मुग्धा केसवदास ।
खेलै बोलै बालबिधि, हँसै त्रसै सबिलास ।२२।

उदाहरण

चंचल न हूजै नाथ, अंचल न ऐंचो हाथ,
सोवैं नेक सारिकाहू सुक तौ सुवायौ जू ।
मंद करौ दीप-दुति चंद-मुख देखियत,
दौरिकै दुराइ आऊँ द्वार त्यों दिखायौ जू ।
मृगज-मराल-बाल बाहिरे बिडारि देहुँ,
भायौ तुम्हें केसव सु मोहू मन भायौ जू ।
छल के निवास ऐसे बचन-बिलास सुनि,
चौगुनो सुरतिहूँ तैं स्याम सुख पायौ जू ।२३।

लज्जाप्राय मुग्धा

मुग्धा लज्जाप्रायरति, बरनत कबि इहिं रीति ।
करै जु रति अति लाज सों, पतिहिं बढ़ावति प्रीति ।२४।

उदाहरण

बोली न हौं वे बुलाई रहे हरि पाइ परे अरु ओलियौ ओड़ी ।
केसव भेंटिबे कौं भरि अंक छुड़ाइ रहे जक हौं नहिं छोड़ी ।
सूधें चितैबै कौं केतौ कियो सिर चाँपि उठाई अँगूठनि ठोढ़ी ।
मैं भरि चित्त तऊ चितयो न रही गड़ि नैननि लाज निगोड़ी ।२५।

मुग्धा-शयन

मुग्धा सोइ रहै नहीं, पियसँग सुनहु सुजान ।
जौ क्यों हूँ सोवै सखी, सुख नहिं ताहि समान ।२६।

उदाहरण

पाइ परें मनुहारि कियें पलिका पर पाउँ धर्‌यो भय-भीने ।
सोइ गई कहि केसव कैसहुँ कोरहिं कोरिक सौंहनि कीने ।
साहस कै मुख सों मुख छ्वै छिन में हरि मानि सबै सुख लीने ।
एक उसाँसहिं के उससे सिगरेई सुगंध बिदा करि दीने ।२७।

मुग्धा-सुरति

मुग्धा सुख्ख करै नहीं, सपनेहूँ सुख मानि ।
छल-बल कीनें होति है, सुख-सोभा की हानि ।२८।

उदाहरण

सुख दैं सखीनि बीच दै कै सौहैं द्याइ कै,
खवाइ कछू स्वाइ बस कीनी बरुबसु है ।
कोमल मृनालिका सी मल्लिका की मालिका सी,
बालिका जु डारी मीड़ि मानुसु कि पसु है ।
जानै न बिभात भयो केसव सुनै को बात,
देखौ आनि गात जात भयो किधौं असु है ।
चित्र सी जु राखी वह चित्रिनी बिचित्र यह,
देखौ धौं नए रसिक या में कौन रसु है ।२९।

मुग्धा का मान

मुग्धा मान करै नहीं, करै तौ सुनहु सुजान ।
त्यों डरपाइ छुड़ाइयै, ज्यों डरपै अज्ञान ।३०।

उदाहरण

बोलै न बाल बुलावतहूँ नख-रेख लिखै भुव प्रेम-परेखौ ।
आपनो हाथ बिलोकि-बिलोकि कह्यो तब केसव बुद्धिबिसेखौ ।
छोटी-बड़ी बिधि-रेख लिखी जुग आयु की रेख सु कौन जु लेखौ ।
प्रेम तें बोल सह्यो न परयो अकुलाइ कह्यो पिय केसी है देखौ ।३१।

मध्या के भेद

मध्या आरूढ़जोबना, प्रगलभबचना जानि ।
प्रादुर्भूतमनोभवा, सुरतिबिचित्रा आनि ।३२।

आरूढ़यौवना मध्या

मध्या आरूढ़जोबना, पूरन जोबनवंत ।
भाग सुहाग भरी सदा, भावति है मन कंत ।३३।

उदाहरण

चंद को सो भाग भाल, भृकुटी कमान ऐसी,
मैन कैसे पैने सर नैननि बिलासु है ।
नासिका सरोज, गंधबाह से सुगंधबाह,
दार्‌यों से दसन केसौ बीजुरी सो हासु है ।
भाई ऐसी ग्रीव-भुज, पान सो उदर अरु,
पंकज से पाइ गति हंस की सी जासु है ।
देखी है गुपाल एक गोपिका मैं देवता सी,
सोने सो सरीर सब सोंधे की सी बासु है ।३४।

प्रगल्भवचना मध्या

प्रगलभबचना जानि तिहि, बरनौं केसवदास ।
बचननि माँझ उराहनो, देइ दिखावै त्रास ।३५।

उदाहरण

कान्ह भलें जु भलें ढँग लागे भलें इन नैननि के रँग रागे ।
जानति हौं सबहीं तुम जानत आपु से केसव लालच लागे ।
जाहु नहीं, अहो जाहु चले, हरि जात जितै दिनहीं बनि बागे ।
देखि कहाँ रहे धोखें परे उबटौगे जू देखौ ब देखहु आगे ।३६।

प्रादुर्भूतमनोभवा मध्या

प्रादुर्भूतमनोभवा मध्या कहौं बखानि ।
तन मन भूषित सोभियै केसव कामकलानि ।३७।

उदाहरण

आजु मैं देखी है गोपसुता इक, होइ न ऐसी अहीर की जाई ।
देखतहीं रहियै दुति देह की देखे तें और न देखी सुहाई ।
एक ही बंक बिलोकनि ऊपर वारौं बिलोकि त्रिलोक-निकाई ।
केसवदास कलानिधि सो बर बूझियै काम कि मेरो कन्हाई ।३८।

सुरतविचित्रा मध्या

अति बिचित्रसुरता सु तौ, जाको सुरत बिचित्र ।
बरनत कबिकुल कों कठिन, सुनत सुहावै मित्र ।३९।

उदाहरण

केसौदास सबिलास मंदहासजुत अवि-
लोकनि अलापनि को आनँद अपार है ।
बहिरति सात पुनि अंतरति सात पुनि,
रति बिपरीतनि को बिबिध बिचार है ।
छूटि जाति लाज तहाँ भूषन सुदेस केस,
टूटि जात हार सब मिटत सिँगार है ।
कूजि कूजि उठैं रतिकूजतनि सुनि खग,
सोई तौ सुरत सखी और बिवहार है ।४०।

सात प्रकार की बहिर्रति

आलिंगन, चुंबन, परस, मर्दन, नख-रद-दान ।
अधरपान सो जानियै, बहिरति सात सुजान ।४१।

सात प्रकार की अन्तररति

थिति, तिर्यक, सनमुख, बिमुख, अध, ऊरध, उत्तान ।
सात अंतरति समुझियै, केसवराइ सुजान ।४२।

सोलह श्रृंगार

प्रथम सकल सुचिमंजन अमल बास,
जावक सुदेस केस-पास को सुधारिबो ।
अंगराग भूषन बिबिध मुखबास राग,
कज्जल-कलित लोल लोचन निहारिबो ।
बोलनि हँसनि मृदु चातुरी चितौनि चारु,
पलपल प्रति पतिब्रत प्रतिपारिबो ।
केसौदास सबिलास करहु कुँवरि राधे,
इहि बिधि सोरह सिंगारनि सिँगारिबो ।४३।

सुरतान्त

सुंदरता पय पावक जावक पीक हियें नखचंद नए हैं ।
चंदन चित्र सुधा, बिष अंजन, टूटि सबै मनिहार गए हैं ।
केसव नैननि नींदमई मदिरा मंद घूमत मोहमए हैं ।
केलि कै नागर नागरी प्रात उजागर सागर-भेष भए हैं ।४४।

मध्या के तीन और भेद

सिगरी मध्या तीन बिधि, धीरा और अधीर ।
धीराधीरा तीसरी, बरनत है कबि धीर ।४५।

धीरा बोलै बक्र बिधि, बानी बिषम अधीर ।
पिय सों देइ उराहनो, सो धीरा न अधीर ।४६।

धीरा

ज्यों ज्यों हुलास सों केसवदास बिलास निवास हियें अवरेख्यो ।
त्यों त्यों बढ़यो उर कंप, कछू भ्रम भाँति भयो किधौं सीत बिसेख्यो ।
मुद्रित होत सखी बरहीं मेरे नैन-सरोजनि साँच कै लेख्यो ।
तैं जु कह्यो मुख मोहन को अरबिंद सो है सु तौ चंद सो देख्यो ।४७।

अधीरा

तात को सो गात सब बल बलबीर को सो,
मात को सो मुख महामोह मन भायो है ।
थल सो अचल सील, अनिल सो चल चित्त,
जल सो अमल, तेज तेज को सो गायो है ।
केसौदास बसत अकास के प्रकास घोष,
घटघट घरघर घैरू घनो छायो है ।
रति की सी रति, नाथ, रूप रतिनाथ को सो,
कहौ केसौराई झूठ कौन यह पायो है ।४८।

धीराधीरा

कान्ह भले जु भले समुझाइहौं मोहसमुद्र कि ज्यों उमह्यो हो ।
केसव आपनो मानिक सो मन हाथ पराए दै कौनें लह्यो हो ।
नैननिहीं मिलिबो करियै अब बैननि को मिलिबो तो रह्यो हो ।
जाइ कह्यो तुम जैसे सखीनि सों एहो गुपाल मैं ऐसो कह्यो हो ।४९।

प्रौढ़ा के चार भेद

सुनि समस्तरसकोबिदा, चित्तबिभ्रमा जाति ।
अति आक्रामित नाइका, लब्धापति सुभ भाँति ।५०।

समस्तरसकोविदा प्रौढ़ा

सो समस्तरसकोबिदा, कोबिद कहत बखानि ।
जो रस भावै प्रीतमहिं, ताही रस की दानि ।५१।

उदाहरण

देखी है गुपाल एक गोपिका मैं देवता सी,
सोने तें सलोनी बास सोंधे तें सुहाई है ।
सोभा ही सुभाउ अवतार लियो घनस्याम,
किधौं यह दामिनीयै कामिनी ह्वै आई है ।
देवी कोउ मानवी न दानवी न होइ ऐसी,
भानवी न हावभाव भारती पढ़ाई है ।
केसौदास सब सुख-साधन की सिद्धि यह,
मेरे जान मैनहीं सों मैनका की जाई है ।५२।

विचित्रविभ्रमा प्रौढ़ा

अति बिचित्रबिभ्रम सु वह, प्रौढ़ा कहत बखानि ।
जाकी दीपति दूतिका, पियहि मिलावै आनि ।५३।

उदाहरण

है गति मंद मनोहर केसव आनँदकंद हियें उलहे हैं ।
भौंह-बिलासनि कोमल हासनि अंगसुबासनि गाढ़े गहे हैं ।
बंक बिलोकनि कों अवलोकि सु मार ह्वै नंदकुमार रहे हैं ।
एई तौ काम के बान कहावत फूलनि के बिधि भूलि कहे हैं ।५४।

आक्रामितनायिका प्रौढ़ा

सो आक्रामित नाइका, प्रौढ़ा कहि दै चित्त ।
मनसा बाचा कर्मना, जिनि बस कीनो मित्त ।५५।

उदाहरण

तो हित गाइ बजावत नाचत बार अनेक सिँगारु बनायो ।
जीहू में आन कौ आनिबो छाड़्यो री तौऊ न तेरो भयो मनभायो ।
भावै सो तूँ करिबो करि भामिनि भाग बड़े बस तैं करि पायो ।
कान्ह त्यों सूधें जु चाहति नाहि सु चाहति है अब पाइ लगायो ।५६।

लब्धापति प्रौढ़ा

सो लब्धापति जानियें, केसव प्रगट प्रमान ।
कानि करै पति कुल सबै, प्रभुता प्रभुहि समान ।५७।

उदाहरण

आज बिराजत हैं कहि केसब श्रीबृषभानु-कुमारि कन्हाई ।
बानि बिरंचि बहिक्रम काम रची जु बची सु बधूनि बनाई ।
अंग बिलोकि त्रिलोक में ऐसी को नारि नहीं जिन नारि नवाई ।
मूरतिवंति सिँगारि-समीप सिँगार कियें जनु सुंदरताई ।५८।

प्रौढ़ा के अन्य तीन भेद

प्रौढ़ा धीरा के लक्षण

आदर माँझ अनादरै, प्रकट करै हित होई ।
आकृति आप दुरावई, प्रौढ़ा धीरा दोइ ।५९।

सादरा प्रौढ़ा धीरा

आवत देखि लिये उठि आगें ह्वै आपुहि केसव आसनु दीनो ।
आपुहि पाई पखारि भलें जल, पानी को भाजन लाइ नवीनो ।
बीरी बनाइकै आगें धरी जब बैहर कौं कर बीजना लीनो ।
बाँह गही हरि, ऐसे कह्यो हँसि मैं तौ इतौ अपराध न कीनो ।६०।

आकृतिगुप्ता प्रौढ़ा

चितवौ चितवाएँ हँसाएँ हँसौ हो बुनाएँ तें बोलौ रहौ नतु मौने ।
सौंह अनेकनि आवहु अंक, करौ रति कों प्रति रैन की रौने ।
ख्वाएँ तें खाहु बरयाइ बिरी जनु आई हौ केसव आज ही गौने ।
मोहन के मन मोहन कों सु कहौ यह धौं सिखई सिख कौने ।६१।

हित कै इत देखहु देख्यो सबै हित-बात सुनौ जु सुनी सब ही हैं ।
यह तौ कछु और वहै सब ही अरु सौंह करौ ब करी जु तही हैं ।
समुझाई कहौं समुझी सब केसव झूठी सबै हमसों जु कही हैं ।
मान क्रियो अपमान करौ तौ हँसौ अब कै हँसिबे कों रही हैं ।६२।

प्रौढ़ा अधीरा के लक्षण

पति को अति अपराध गनि, हतन कहै हित मानि ।
कहत अधीरा प्रौढ़ तिहि, केसवदास बखानि ।६३।

हौं सुख पाई सिखाइ रही सिख सीखे न ए सखि तैं हूँ सिखाई ।
मैं बहुतै दुख पाइहू देख्यौ पै केसव क्योंहूँ कुटेव न जाई ।
दंड दियें बिनु साधुनिहुँ सँग छूटति क्यों खल की खलताई ।
देखहु दै मधु की पुट कोटि मिटै न घटै बिष की बिषमाई ।६४।

प्रौढ़ा धीराधीरा

मुख रूखी बातैं कहै, जिय मैं पिय की भूख ।
धीराधीरा जानिये, जैसी मीठी ऊख ।६५।

उदाहरण

हो मन मैलो न जौ लौं कछू अब छाड़हु बोलिबो बोल हँसौंहैं ।
केसव औरनि सों रसरासि रस्यो रसबाद सबै हम सौं हैं ।
देखहु धौं इक बार सँकोचनि आरस-लोचन आरसी सौंहैं ।
आए जू वैसेई साज सौं आजु सु भूलि गई पिय काल्हि की सौंहैं ।६६।

नायिकाओं का दूसरा प्रधान भेद--परकीया

सब तें पर परसिद्ध जग, ताकी जु प्रिया होइ ।
परकीया तासों कहैं, परम पुराने लोइ ।६७।

परकीया नायिका के भेद

परकीया द्वै भाँति पुनि, ऊढ़ा एक अनूढ़।
जिन्हैं देखि सुनि होत बस, संतत मूढ़ अमूढ़ ।६८।

ऊढ़ा-अनूढ़ा के लक्षण

ऊढ़ा होइ बिबाहिता, अबिबाहिता अनूढ़ ।
तिनके कहौं बिलास अब, केसव गूढ़ अगूढ़ ।६९।

ऊढ़ा का उदाहरण

बैठी सखीनि की सोभै सभा सब ही के सु नैननि माँझ बसै ।
बूझे तें बात बरयाई कहै मन ही मन केसवराइ हँसै ।
खेलति है इत खेल उतै पिय चित्त खिलावति यौं बिलसै ।
कोउ जानै नहीं दृग दौरि कबै कित ह्वै हरि आनन छ्वै निकसै ।७०।

अनूढ़ा का उदाहरण

बैठी हुती ब्रजनारिन में बनि श्रीबृषभानुकुमारि सभागी ।
खेलति ही सखी चौपर चारु भई तिहिं खेल खरी अनुरागी ।
पीछे तें केसव बोलि उठे सुनिकै चित चातुरी आतुरी जागी ।
जानी न काहू कबै हरि के सुर-मारगहीं सर सी दृग लागी ।७१।

अनूढ़ा और ऊढ़ा के और लक्षण

काहू सों न कहै कछू, बात अनूढ़ा गूढ़ ।
सखी सहेली सों कहै, ऊढ़ा गूढ़ अगूढ़ ।७२।

ऊढ़ा का वचन

केसरवाइ की सौहें ककै कछू एकनि आपु में होड़ परी ।
एक चितै मुसिकाइ इतै, उत बात कहै बहु भाइ भरी ।
चारु चकोर बिलोचन भा सी चहूँ दिसि तें अँगुरी पसरी ।
सखि काल्हि गई हुती गोकुल हौं सबहीं मिलि द्वैज को चंद करी ।७३।

जगनायक की नायिका, बरनी केसवदास ।
तिनके दरसन रस कहौं, सुनौ प्रछन्न प्रकास ।७४।

चौथा प्रकाश

दर्शन

लक्षण और भेद

ए दोऊ दरसैं दरसु, होहिं सकाम सरीर ।
दरसन चारि प्रकार को, बरनत हैं कबि धीर ।१।

एक जु नीके देखियै, दूजें दरसन चित्र
तीजें सपने देखिये, चौथें श्रवननि मित्र ।२।

साक्षात् दर्शन का लक्षण

दरसन नीके दरसि यहि, दंपति प्रति सुख मान ।
ताहि कहत साक्षात हैं, केसवदास सुजान ।३।

नींद भूख दुति देह की, गई सुनतहीं जाहि ।
को जानै ह्वैहै कहा, केसव देखें ताहि ।४।

नायिका का साक्षात् दर्शन (प्रच्छन्न)

कवि केसव श्रीबृषभानु-कुमारि सिँगार सिँगारि सबै सरसै ।
सबिलास चितै हरिनायक त्यों रतिनायक-सायक से बरसै ।
कबहूँ मुख देखति दर्पन लै उपमा मुख की सुखमा सरसै ।
जानु आनँदकंद सँपूरन चंद दुरयो रबि-मंडल में दरसै ।५।

नायिका का साक्षात् दर्शन (प्रकाश)

पहिले तजि आरस आरसी देखि घरीकु घसे घनसारहि लै ।
पुछि पोंछि गुलाब तिलौंछि फुलेल अँगौछे में आछे अँगौछनि कै ।
कहि केसव मेद जुबाद सों माँजि इते पर आँजे मैं अंजन दै ।
बहुरयो दुरि देखौं तौ देखौं कहा सखि लाज तौ लोचन लागियै है ।६।

नायक का साक्षात् दर्शन (प्रच्छन्न)

भाल गुही गुन लाल लटैं लपटी लर मोतिन की सुखदैनी ।
ताहि बिलोकति आरसी लै कर आरस सों इक सारसनैनी ।
केसव कान्ह दुरें दरसी परसी उपमा मति की अति पैनी ।
सूरज-मंडल में ससि-मंडल मध्य धँसी जनु जाई त्रिबैनी ।७।

नायक का साक्षात् दर्शन (प्रकाश)

इक तौ उर और उरोज अनूपम तैसे मनोहर हार महा री ।
सखि चित्त चलै तरुनीनिहूँ को तरुनैन की केसव बात कहा री ।
हितु सौं हित की कहि आवति है पर कौ लगि होउँ री कौतुकहारी ।
अब अंचल दै नँदलाल बिलोकत री दधि नोखी बिलोवनहारी ।८।

नायिका का चित्रदर्शन (प्रच्छन्न)

लोचन ऐंचि लिये इत कों मन की गति जद्यपि नेहनही है ।
आनन आइ गए श्रम-सीकर रोम उठे तन कंप लही है ।
तासों कहा कहियै कहि केसव लाज-समुद्र में बूड़ि रही है ।
चित्रहु में हरि-मित्रहि देखत यौं सकुची जनु बाँह गही है ।९।

नायिका का चित्रदर्शन (प्रकाश)

केसौदास नेहदसा दीपक सजोय कैसे,
ज्योति ही के ध्यान तम-तेजहि नसायहै ।
आँखिन सों बाँधे अन्न काहू की बुझानी भूख,
पानी की कहानी रानी प्यास क्यों बुझायहै ।
ए री मेरी इंदुमुखी इंदीवर-नैनी लखें,
इंदिरा के मंदिर में संपति सिधायहै ।
ऐसे दिन ऐसें ही गँवावति गँवारि कहा,
चित्र देखें मित्र के मिले को सुख पायहै ।१०।

नायक का चित्रदर्शन (प्रच्छन्न)

रूठिबे को तूठिबे को मृदु मुसक्याय कै,
बिलोकिबो को भेद कछू कह्यौ न परतु है ।
केसौदास बोले बिनु बोलनि के सुनें बिनु,
हिलनि मिलनि बिनु मोहि क्यों सरतु है ।
कौ लगि अलोनो रूप प्याय प्याय राखौं नैन,
नीर देखें मीन कैसे धीरज धरतु है ।
चित्रिनी बिचित्र चित्र नीकें ही चितैयै मन,
चित्र में चिताएँ चित्त चौगुनो जरतु है ।११।

नायक का चित्रदर्शन (प्रकाश)

अंतरिच्छ-गच्छनीनि यच्छनी सुलच्छनीनि,
अच्छी अच्छी अच्छनीनि छबि छमनीय है ।
किंनरी नरी सुनारि पन्नगी नगी कुमारि,
आसुरी सुरीनिहूँ निहारि नमनीय है ।
भोगिन की भामिनी कि देह धरे दामिनी कि,
काम ही की कामिनी कि ऐसी कमनीय है ।
चित्रहू में चित्तहि चुरावति है केसौदास,
राम की सी रमनी रमा सी रमनीय है ।१२।

स्वप्नदर्शन का लक्षण

केसव दरसन स्वप्न को, सदा दुरयोई होय ।
कबहूँ प्रगट न जानियै, यह जानै सब कोय ।१३।

नायिका का स्पप्नदर्शन (प्रच्छन्न)

आतुर ह्वै उठि दौरी अली, जन आतुर ज्यों गहियै सु गही त्यों ।
हो मेरी रानी कहा भयो तोकहूँ बूझति केसव बूझियै री ज्यों ।
डीठि लगी, किधौं प्रेत लग्यो कि लग्यो उर प्रीतम जाहि डरी यों ।
आनन सीकर सी कहियै धक सोवत तें अकुलाई उठी क्यों ।१४।

नायक का स्वप्नदर्शन (प्रच्छन्न)

नख-पद-पदवी को पावै पदु द्रौपदी न,
एकौ बिसौ उरबसी उर में न आनिबी ।
लोम सी पुलोमजा न तिल सी तिलोत्तमा न,
मैलहू समान मन मेनका न मानिबी ।
जानियै न कौन जाति अब ही जगाएँ जाति,
जीवन तौ जानिहौं जौ ताहि पहिचानिबी ।
बातक सी बानी माँह, भाव सी भवानी माँह,
केसौदास रति में रतीक ज्योति जानिबी ।१५।

नायिका का श्रवणदर्शन (प्रच्छन्न)

सौंहैं दिवाय दिवाय सखी इक बारक काननि आनि बसाए ।
जानै को केसव कानन तें कित ह्वै कब नैननि माँझ सिधाए ।
लाज के साज धरेई रहे सब नैननि लै मनहीं सों मिलाए ।
कैसी करौं अब क्यों निकसैं री हरेंई हरें हिय में हरि आए ।१६।

नायिका का श्रवणदर्शन (प्रकाश)

कौ लौं पीहौ कानरस, रूप की बुझैहै प्यास,
केसौदास कैसें न नयन भरि पीजियै ।
बीर की सौं मेरी बीर बारी है जु वारौं आनि,
नेक किन हँसहि बलाय तेरी लीजियै ।
बरसक माँहि यह बैस अलबेली बीतें,
दैहौ सुख सखिन क्यौं अबहीं न दीजियै ।
एरी लड़बावरी अहीरी ऐसी बूझै तोहि,
नाह सों सनेह कीजै नाह सों न कीजियै ।१७।

नायक का श्रवणदर्शन (प्रच्छन्न)

लंघतु है लोक, लोकलीक न उलंघी जात,
सबही तूँ समझावै तोहि समझावै को ।
छोड़न कहत तनु तनक न छूटै लाज,
धन मीत राखि दोऊ कोबिद कहावै को ।
सोच को सँकोचहू को पूरब-पछिम पंथ,
केसौदास एक काल एक जन धावै को ।
दुख-सुख दूरीदुरा दूरिहूँ तें मेरे मन,
जैसी सुनी तैसी तोहि आँखिन दिखावै को ।१८।

नायक का श्रवणदर्शन (प्रकाश)

निपट कपट हर प्रेम को प्रकट कर,
बीस बिसे बसीकर कैसें उर आनियै ।
काम को प्रहरषन कामना को बरषन,
कान्ह को सँकरषन सब जग जानियै ।
किधौं केसौदास महि मोहनी को भूषन है,
किधौं ब्रजबालनि को दूषन बखानियै ।
सुनतहीं छूटच्यो धाम बन बन डोलैं स्याम,
राधे तेरो नाम के उचाटमंत्र मानियै ।१९।

दरस रमन रमनीनि के, कहे परम रमनीय ।
प्रगटन प्रेम प्रभाव अब, कहौं कछू कमनीय ।२०।

पाँचवाँ प्रकाश

दंपति चेष्टा वर्णन

लक्षण

तिनके चित की जानि सखि, पिय सों कहैं सुनाय।
कहै सखी सों प्रीतमै, आपुन तें अकुलाइ ।१।

सखी का नायक से विरह-निवेदन

कान्हि की ग्वालि तो आजहू लौं न सँभारति केसव कैसेहूँ देहै ।
सीरी ह्वै जाति, उठै कबहूँ जरि जीव रह्यौ कै रही रुचि-रेहै ।
कोरि बिचार बिचारति है उपचारनि के बरसैं सखिं मेहै ।
कान्ह बुरौ जिन मानौ तिहारी बिलोकनि में बिस बीस बिसे है ।२।

नायिका की सखी के प्रति नायक का वचन

प्यास ह्वै रही उदास, भागी भूख गहि त्रास,
केसौदास नींदहू की निंदा नित ठानी है ।
मति को मतौ न लेय बिद्या की बिदाई देय,
सोभा सुकी सेय सेय सब सुख सानी है ।
बिष से लगत गीत, केलि की न परतीत,
प्रीत उर पाहुनी सी पचि पहिचानी है ।
तो बिन कहै को गाथ धीरता न ताके साथ,
मोहिं को मिलावै हाथ लाज के बिकानी है ।३।

विविध चेष्टाएं

पिय सों प्रगटन कहँ, जितने करौ उपाय ।
ते सब केसवदास अब, सबनि सुनाय ।४।

जब चितवै पिय अनत ही, तब चितवै निहसंक ।
जानि बिलोकत आपु त्यों, अलिहि लगावै अंक ।५।

कबहूँ श्रुति-कंडू करै, आरस सों ऐंड़ाई ।
केसवदास बिलास सों, बार बार जमुहाइ ।६।

झुठेहीं हँसि हँसि उठै, कहै सखी सों बात ।
ऐसें मिसहीं मिस प्रिया, पियहि दिखावै गात ।७।

यों हीं पीय पियानि प्रति, प्रगटत अपनी प्रीति ।
सों प्रच्छन्न प्रकास करि, बुधिबल करत समीति ।८।

नायिका की प्रच्छन्न चेष्टा

चोरि चोरि चित चितवति मुँह मोरि मोरि,
काहें तें हँसति हियें हरष बढ़ायो है ।
केसौदास की सौं तूँ जँभाति कहा बार बार,
बीरी खाइ मेरी बीर आरस जौ आयो है ।
एँड़ सों एँड़ाति अति अंचल उड़ात, उर
उघरि उघरि जात गात छबि छायो है ।
फूलि फूलि भेंटति रहति उर झूलि झूलि,
भूलि भूलि कहति कछू तैं आज खायो है ।९।

नायिका की प्रकाश चेष्टा

मेरो मुख चूमें तेरी पूरी साध चूमिबे की,
चाटें ओस असु क्यों सिरात प्यास-डाढ़े हैं ।
छोटे छोटे कर कहा छ्वावति छबीली छाती,
छ्वावौ जाके छ्वाइवे के अभिलाष बाढ़े हैं ।
खेलन जौ आई हौ तौ खेलौ जैसे खेलियत,
केसौदास की सौं तैं ए कौन खेल काढ़े हैं ।
फूलि फूलि भेंटति है मोहिं कहा मेरी भटू,
भेंटै किन जाइ जे वै भेंटिबे कों ठाढ़े हैं ।१०।

नायक की प्रच्छन्न चेष्टा

छोरि छोरि बाँधौ पाग आरस सों आरसी लै,
अनत ही आन भाँति देखत अनैसे हौ ।
तोरि तोरि डारत तिनूका कहौ कौन पर,
कौन के परत पाइ बावरे ज्यों ऐसे हौ ।
कबहूँ चुटकि देति चटकि खुजावौ कान,
मटकि ऐंड़ाउ जुरी ज्यों जँभात तैसे हौ ।
बार बार कौन पर देत मनिमाला मोहि,
गावत कछू के कछू आज कान्ह कैसे हौ ।११।

नायक की प्रकाश चेष्टा

जा लगि लाँच लुगाइनि दै दिन नाच नचावत साँझ पहाऊँ ।
केसव मंत्र करौ बसकारक हारक जंत्र कहाँ लौं गनाऊँ ।
हारि रहे हरि क्योंहूँ मिली न मिलाऊँ जौ ताहि तौ माँगौं सो पाऊँ ।
ठाढ़ी वै जाई मिलौ मिलिबे कहँ और कछू कनियाँ करि लाऊँ ।१२।

स्वयंदूतत्व-लक्षण

जौ क्योंहूँ न मिलै कहूँ, केसव दोऊ ईठ ।
तौ तब अपने आप ही, बुधिबल होत बसीठ ।१३।

नायिका का प्रच्छन्न स्वयंदूतत्व

दूरि तें देखिबे कौं ह्वै ह्वै दीन मनाई हुती लिखि ही लिखि चीठी ।
देखें मिल्यो मनु हौं हू मिली मिलि खेलिबेहूँ कौं मिली मति मीठी ।
ऐसे में और चलाइहौ केसव कैसहूँ कान्ह कुमार दै ढीठी ।
लागै न बार मृनाल के तार ज्यों टूटैगी लाल हमैं तुम्हैं ईठी ।१४।

दूसरा उदाहरण

छुवौ जनि हाथ सों हाथ किये पल ही पल बाढ़त प्रेमकला ।
न जानियै जी मैं कहा बसि जाइ चलै पुनि केसव कौन चला ।
भले ही भले निबहै जो भली यह देखिबे ही की हला हू भला ।
मिलौ मन तो मिलिबौई कहूँ मिलिबौ न अलौकिक नंदलला ।१५।

नायिका का प्रकाश स्वयंदूतत्व

धाई नहीं घर दाई परी जुर, आई खिलाई की आँखि बहाऊँ ।
पौरियै आवै रतौंधी इते पर ऊँचो सुनै सु महा दुख पाऊँ ।
कान्ह निबेरहु न्याउ नयो इन आलिन कौ लगि हौं बहराऊँ ।
ए सब मो सँग सोवन आवैं कि मैं इनके सँग सोवन जाऊँ ।१६।

नायक का प्रच्छन्न स्वयंदूतत्व

आपनेहीं भाई के ए सोहत सरीक से वे,
केसौदास दास ज्यों चलत चित लीने हैं ।
आपुहीं अठाउ कै ते लेत नाउँ मेरो वे तौ,
बापुरे मिलाप कै सँलाप करि हीने हैं ।
राधिकै सुनाइ कै कहत ऐसें घनस्याम,
सुबल को लै लै नाम कामभयभीने हैं ।
साथ लै सखानि अब जैबो बन छाड्यो हम,
खेलिबे को संग सखा साखामृग कीने हैं ।१७।

नायक का प्रकाश स्वयंदूतत्व

बन जैये चलौ, कोऊ ठाली है केसव हौ तुम हैं तो अरे अरिहौ ।
कछु खोलियै खेलि न आवत आज ही भूल्यो न भूल्यो गरे परिहौ ।
हितु है हिय, है किधौं नाहीं तऊ हितु नाहिं हिये तु लला लरिहौ ।
हम सों यह बूझियै ऐसी कहौ ब कही हो कही सु कहा करिहौ ।१८।

केसौदास घर घर नाचत फिरत गोप,
एक परे छकि ते मरेई गुनियत है ।
बारुनी के बस बलदाऊ भए सखा सब,
संग लै को जैये दुख सीस धुनियत है ।
मोहिं तौ गए हीं बनै दीह दीपमाला पाइ,
गाइनि सँवारिबे को चित्त चुनियत है ।
जो न बसौं लोलिनैनि लेरुवा मरहिं सब,
खरिक खरेई आज सूने सुनियत है ।१९।

ऊढ़ा पुनि यहि भाँति करि, बहु बिधि हितनि जनाइ ।
आपुन ही तें लाज तजि, पियहि मिलै अकुलाइ ।२०।

पंथ न थकत पल मनोरथ-रथनिके,
केसौदास जगमग जैसें गाए गीत मैं ।
पवन बिचार चक्र चक्रमन चित चढ़ि,
भूतल अकास भ्रमै घाम जल सीत मैं ।
को लौं राखौं थिर बपु बापी कूप सर सम,
हरि बिनु कीने बहु बासर बितीत मैं ।
ज्ञान-गिरि फोरि तोरि लाज-तरु जाइ मिलौं,
आपु ही तें आपगा ज्यौं आपुनिधि प्रीतमैं ।२१।

जाति भई सँग जाति लै कीरति, 'केसव' है कुल सों हित खूट्यो ।
गर्ब गयो गुन जोबन रूप को पुन्य सु तौ पल ही पल फूट्यो ।
कान्ह तिहारियै आन कियें कहौं लाज सों नीकों ह्वै नातोई टूट्यो ।
छाँड़्यो सबै हम हेरि तुम्हैं तुम पै तनकौ कपटौ नहिं छूट्यो ।२२।

अधिक अनूढ़ा लाज तें, पिय पै जाइ न आप ।
क्योंहूँ करि सखियै कहै, ताके उर को ताप ।२३।

जाने को केसव कौने कह्यो कब कान्ह हमारे हिँडोरनि झूलै ।
पान न खाइ, न पान्यो पियै तब तें भरि लोचन लेत समूलै ।
जाहु नहीं चलि बेगि बलाइ ल्यौं लेहु सकेलि कहा यह भूलै ।
जानत हौ वह काम-कली कुँभिलाइ गएँ बहुरयौ फिरि फूलै? ।२४।

प्रथम-मिलन के स्थान

जनी सहेली धाइ घर, सूने घर निसि चार ।
अति भय उत्सव ब्याधि मिस, न्यौते सु बन-बिहार ।२५।

इन ठौरनि ही होत है, प्रथम मिलन संसार ।
केसव राजा रंक को, रचि राखे करतार ।२६।

दासी के घर मिलन

बेषु कै कुमारिका को ब्रज की कुमारिकानि,
माँझ साँझ केसौदास त्रास पग पेलिकै ।
काम की लता सी चपला सी प्रेमपासी सी है,
राधिका के बुद्धिबल कंठ भुज मेलिकै ।
दौरि दौर दुरि दुरि पूरि पूरि अभिलाष,
भाँति भाँति के अनूप-रूप बहु केलि कै ।
जनी के अजिर आज रजनी में सजनी री,
साँची करी स्याम चोरमिहचनी खेलिकै ।२७।

सहेली के घर मिलन

नैननि के तारनि में राखौ प्यारे पूतरी कै,
मुरली ज्यौं लाइ राखौ दसन-बसन में ।
राखौ भुजबीच बनमाली बनमाला करि,
चंदन ज्यों चतुर चढ़ाइ राखौ तन में ।
कैसौराइ कलकंठ राखौ बलि कठुला कै,
करम करम क्योंहूँ आनी है भवन में ।

चंपक-कली ज्यों कान्ह सूँघि सूँघि देवता ज्यों,
लेहु मेरे लाल, इन्है मेलि राखौ मन में ।२८।

धाइ के घर मिलन

हँसत खेलत खेल मंद भई चंददुति,
कहत कहानी और बूझत पहेली-जाल ।
केसौदास नींदबस अपने अपने घर,
हरें हरें उठि गए बालिका सकल बाल ।
घोरि उठे गगन सघन घन चहूँ दिसि,
उठि चले कान्ह धाइ बोलि उठी तिहिं काल ।
आधि राति अधिक अँध्यारे माँझ जैहौ कहाँ,
राधिका की आधी सेज सोइ रहौं प्यारे लाल ।२९।

शून्य गृह में मिलन

देखत ही चित्र सूनी चित्रसाला बाला आजु,
रूप की सी माला राधा रूपकु सुहाए री ।
नूपुर के सुरनि के अनुरूप तानैं लेति,
पगतल ताल देति अति मन भाए री ।
ऐसे में दिखाई दीनी औचक कुँवर कान्ह,
जैसे भए गात तैसे जात न बताए री ।
केसौदास कहे परै अलज सलज से न,
जलज से लोचन जलद से ह्वै आए री ।३०।

निशि-मिलन

एक समै सब देखन गोकुल गोपी-गोपाल-समूह सिधायो ।
राति ह्वै आई चले घर कों दसहूँ दिंसि मेह महा मढ़ि आयो ।
दूसरो बोल ही तें समुझै कहि केसव यों छिति में तम छायो ।
ऐसे में स्याम सुजान बियोग बिदा कै दियो सु कियो मनभायो ।३१।

अति भय का मिलन

जानि आगि लागी बृषभान के निकट भौन,
दौरि ब्रजबासी चढ़े चहूँ दिसि धाइकै ।
जहाँ तहाँ सोर भारी भीर नर-नारिन की,
सब ही की छूट गई लाज हाइ भाइ कै ।
ऐसे में कुँअर कान्ह सारो सुक बाहिर कै,
राधिका जगाई और जुवती जगाइकै ।
लोचन बिलास चार चिबुक कपोल चूमि,
चंपे की सी माला लाल लीनी उर लाइकै ।३२।

उत्सव का मिलन

बल की बरस गाँठि ताकी राति जागिबे कौं,
आई ब्रजसुंदरी सँवारि तन सोनो सो ।
केसौदास भीर भई नंदजू के मंदिरनि,
अध मध ऊरध बच्यो न कोऊ कोनो सो ।
गावति बजावति नचति नाना रूप करि,
जहाँ तहाँ उमँगत आनँद को ओनो सो ।
साँवरे की सूनी सेज सोवत ही राधिकाजू,
सोए आनि साँवरेऊ मानि मन गोनो सो ।३३।

व्याधि के मिस मिलन

सोधि निदाननि दान दिये उपचार बिचार किये न धिरानी ।
बेद के सासन ब्याधि-बिनासन होमहुतासनहू न सिरानी ।
केसव बेगि चलौ बलि बोलति दीन भई बृषभानु की रानी ।
आए हौ मेटि मरू करिकै बहुर्यौ उनके वह पीर पिरानी ।३४।

निमंत्रण के मिस मिलन

न्यौति कै बुलाई हुती बेटी बृषभानुजू की,
जेंबे कौं जसोदा रानी आनी हैं सिँगारिकै ।
भोजन कै, भवन बिलोकिबे कौं पान खात,
ऊपर अकेली गई आनँद बिचारिकै ।
देखत देखत हरि भावते कों भागी देखि,
दौरि गही ब्यालू ऐसी बेनी डर डारिकै ।
भेंटी भरि अंक मनभायो करि छाड्यो मुहुँ,
केसरि सों माँडि लई बेसरि उतारिकै ।३५।

वन-विहार के मिस मिलन

देहि री काल्हि गई कहि दैन पसारहु ओलि भरौ पुनि फेटी ।
छाड़ौ नहीं मग, छाड़ौ जौ या पै छुड़ावौ बिलोकनि लाजलपेटी ।
बात सँभारि कहौ सुनि है कोऊ जानत हौ यह कौन की बेटी? ।
जानत हैं बृषभानु की है पर तोहि न जानत कौन की चेटी ।३६।

जल-विहार के मिस मिलन

हरि राधिका मानसरोवर कें तट ठाढ़े री हाथ सों हाथ छियें ।
पिय के सिर पाग प्रिया मुकताहल छाजत माल दुहूँनि हियें ।
कटि केसव काछनी सेत कछें सबही तन, चंदन चित्र कियें ।
निकसे छिति छीरसमुद्र ही तें सँग श्रीपति मानहु श्रीय लियें ।३७।

रितु ग्रीषम के प्रतिबासर केसव खेलत हैं जमुना जल में ।
इत गोपसुता वहि पार गोपाल बिराजत गोपनि के दल में ।
अति बूड़त हैं गति मीनन की मिलि जाइ उठैं अपने थल में ।
इहिं भाँति मनोरथ पूरि दुवौ जन दूरि रहैं छबि सों छल में ।३८।

इहिं बिधि राधारमन के, बरने मिलन बिसेखि ।
केसवदास निवास बहु, बुधिबल लीजहु लेखि ।३९।

और जु तरुनी तीसरी, क्यों बरनौं यहि ठौर ।
रस में बिरस न बरनियै, कहत रसिकसिरमौर ।४०।

ये सब जितनी नायिका, बरनी मतिअनुसार ।
केसवदास बखानियहु, बुधिबल अष्ट प्रकार ।४१।

प्रथम मिलन थल मैं कहें, अपनी मतिअनुसार ।
हावभाव वर्णन करौं, सुनि अब बहुत प्रकार ।४२।



कृष्णाभिसारिका, कांगड़ा, लगभग 1800 ई०, राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली



राधा की प्रतीक्षा में कृष्ण, मेवाड़, लगभग 1640 ई०, राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली



छठा प्रकाश

भाव-हाव वर्णन

भाव का लक्षण

आनन लोचन बचन मग, प्रगटत मन की बात ।
ताही सों सब कहत हैं, भाव कबिन के तात ।१।

भाव के भेद

भाव सु पंच प्रकार के, सुनि बिभाव अनुभाव ।
थाई, सात्विक कहत हैं, ब्यभिचारी कबिराव ।२।

विभाव का लक्षण

जिनतें जगत अनेक रस, प्रगट होत अनयास ।
तिनसों बिमति बिभाव कहि, बरनत केसवदास ।३।

विभाव के भेद

सब बिभाव द्वै भाँति के केसवदास बखानि ।
आलंबन इक दूसरो उद्दीपन मन आनि ।४।

आलंबन और उद्दीपन

जिन्हैं अतन अवलंबई, ते आलंबन जानि ।
जिनतें दीपति होति है, ते उद्दीप बखानि ।५।

आलंबन के स्थान

दंपति जोबन रूप जाति लच्छनजुत सखिजन ।
कोकिल कलित बसंत फूल फल दल अलि उपबन ।
जलचर जलजुत अमल कमल कमला कमला कर ।
चातक मोर सु सब्द तड़ित धनु अंबुद अंबर ।
सुभ सेज दीप सौगंध गृह पान गान परिधान मनि ।
नव नृत्य भेद बीनादि रव आलंबन केसव बरनि ।६।

उद्दीपन-वर्णन

अवलोकन आलाप परिरंभन नख-रद-दान ।
चुंबनादि उद्दीप हैं, मर्दन परस प्रवान ।७।

अनुभाव-वर्णन

आलंबन उद्दीप के, जो अनुकरन बखान ।
ते कहिये अनुभाव सब, दंपति प्रीति-बिधान ।८।

स्थायी भाव-वर्णन

रति हांसी अरु सोक पुनि, क्रोध उछाह सुजान ।
भय निंदा बिस्मय सदा, थाई भाव प्रमान ।९।

सात्विक भाव के भेद

स्तंभ स्वेद रोमांच सुर भंग कंप बैबन्य ।
आँसू प्रलय बखानिये आठौ नाम अनन्य ।१०।

व्यभिचारी भाव

भाव जु सबही रसन में, उपजत केसवराय ।
बिना नियम तिन सों कहैं, ब्यभिचारी कबिराय ।११।

व्यभिचारी भाव के भेद

निर्बेद ग्लानि संका तथा, आलस दैन्य रु मोह ।
स्मृति धृति ब्रीड़ा चपलता, श्रम मद चिंता कोह ।१२।

गर्व हर्ष आबेग पुनि, निंदा नींद-बिबाद ।
जड़ता उत्कंठा सहित, स्वप्न प्रबोध बिषाद ।१३।

अपस्मार मति, उग्रता, त्रास, तर्क औ ब्याधि ।
उन्माद मरन अवहित्थ है, ब्यभिचारी जुत आधि ।१४।

हाव का लक्षण

प्रेम राधिका कृस्न को, है तातें सिंगार ।
ताके भावप्रभाव तें, उपजत हावबिचार ।१५।

हाव के भेद

हेला लीला ललित मद, बिभ्रम बिहृत बिलास ।
किलकिंचित बिच्छित्ति अरु, कहि बिब्बोक प्रकास ।१६।

मोट्टाइत सुनि कुट्टमित, बोधकादि बहु हाव ।
अपने अपने बुद्धिबल, बरनत कबि कबिराव ।१७।

हेला हाव का लक्षण

पूरन प्रेम-प्रताप तें, भूलत लाज-समाज ।
सो हेला तिहिं हरत हिय, राधा श्रीब्रजराज ।१८।

उदाहरण

अवलोकनि अंकुस एंचि अनूपम भ्रू-जुगपास भलें गल मेली ।
मृदुहास सुबास उठाइ मिली बहै जोन्हकी जामिनी माँझ अकेली ।
अधरासव प्याइ किये बस केसवराय करी रसरीति नवेली ।
बन में बृषभानुसुता सुखहीं हरि कों हरि लै गई हेलहीं हेली ।१९।

बेनु सुनाइ बुलाइ लई बन भौन बुलाइ कै भाँति भली को ।
फूलि गयो मन फूल्यो बिलोकत केसव कानन रासथली को ।
अधराइस प्याइ कियो परिरंभन चुंबन कै मुख कामकली को ।
हेलहिं श्रीहरि नागर आजु हर्यो मन श्रीबृषभानुलली को ।२०।

लीला हाव का लक्षण

करत जहाँ लीलानि को, प्रीतम प्रिया बनाय ।
उपजत लीला हाव तहँ, बरनत केवसराय ।२१।

नायिका का लीला हाव

पायन को परिबो अपमान अनेक सों केसव मान मनैबो ।
मीठो तोर खवाइबो खैबो बिसेषि चहूँ दिसि चौंकि चितैबो ।
चीर कुचीलनि ऊपर पौढ़िबो पातन के खरके भजि ऐबो ।
आँखिन मूदिकै सीखति राधिका कुंजन तें प्रतिकुंजन जैबो ।२२।

नायक का लीला हाव

झाँकि झरोखनि में चढ़ि ऊँचे अवासनि ऊपर देखन धावै ।
निंदत गोपचरित्रनि कों कहि केसव ध्यान ककै गुन गावै ।
चित्रित चित्र में आपुन यों अवलोकत आनँद सों उर लावै ।
आँगन तें घर में घर तें फिरि आँगन बासर कों बिरमावै ।२३।

ललित हाव का लक्षण

बोलनि हँसनि बिलोकिबो, चलनि मनोहर रूप ।
जैसे तैसे बरनिये, ललित हाव अनुरूप ।२४।

नायिका का ललित हाव

कोमल बिमल मन, बिमला सी सखी साथ,
कमला ज्यों लीने हाथ कमल सनाल के ।
नूपुर की धुनि सुनि भोरे कलहंसनि के,
चौकि चौकि परैं चारु चेटुवा मराल के ।
कचनि के भार कुचभारनि सकुचभार,
लचकि लचकि जात कटितट बाल के ।
हरें हरें बोलति बिलोकति हँसत हरें,
हरें हरें चलति हरति मन लाल के ।२५।

नायक का ललित हाव

चपला पट मोर किरीट लसै मघवा-धनु-सोभ बढ़ावत हैं ।
मृदु गावत आवत बेनु बजावत मित्र-मयूर नचावत हैं ।
उठि देखि भटू भरि लोचन चातक-चित्त की ताप बुझावत हैं ।
घनस्याम घनाघन बेष धरे जु बने बन तें ब्रज आवत हैं ।२६।

मद हाव का लक्षण

पूरन प्रेम-प्रभाव तें, गर्व बढ़ै बहु भाव ।
तिनके तरुन बिकार तें, उपजत है मद हाव ।२७।

नायिका का मद हाव

छबि सों छबीली बृषभानु की कुंवरि आजु,
रही हुती रूपमद मानमद छकिकै ।
मारहू तें सुकुमार नंद के कुमार ताहि,
आए री मनावन सयान सब तकिकै ।
हँसि हँसि सौहें करि करि पायँ परि परि,
केसौराय की सौं जब हारे जिय जकिकै ।
ताही समै उठे घन घोरि घोरि दामिनी सी,
लागी लौटि स्याम घन उर सों लपकिकै ।२८।

नायक का मद हाव

मनमोहिनी मोहि सकै न सखी चपला चलचित्त बखानत हैं ।
रति की रति क्योंहूँ न कान करैं दुतिचंदकला घटि जानत हैं ।
कहि केसव और की बात कहा रमनीय रमाहूँ न मानत हैं ।
बृषभानुसुता हित मत्त मनोहर औरहिं डीठि न आनत हैं ।२९।

विभ्रम हाव का लक्षण

बास बिभूषन प्रेम तें, जहाँ होहिं बिपरीत ।
दरसन-रस तन मन रसित, गनि बिभ्रम की रीत ।३०।

नायिका का विभ्रम हाव

कटि के तट हार लपेटि लियो कल किंकिनी लै उर सों उरमाई ।
कर नूपुर सों पग पौंची रची अँगिया सुधि अंचल की बिसराई ।
करि अंजन रंजित चारु कपोल करी जुत जावक नैननिकाई ।
सुनि आवत श्रीब्रजभूषन भूषन भूषतहीं उठि देखन धाई ।३१।

नायक का विभ्रम हाव

नँदनंदन खेलत हे बने गात बनी छबि चंदन के जल की ।
बृषभानुसुताहि बिलोकत ही रुचि चित्त में बिभ्रम की झलकी ।
गिरि जात न जानत पाननि खात बिरी करि पंकज के दल की ।
बिहँसी सब गोपसुता हरि लोचन मूँदी सुरोचि दृगंचल की ।३२।

विहृत हाव का लक्षण

बोलनि के समयें बिषें, बोलन देइ न लाज ।
बिहृत हाव तासों कहैं, केसव कबि कबिराज ।३३।

नायिका का विहृत हाव

मेरे कहे दहिये जु तऊ फिरि ग्रीषम ज्यों हठ-काठ दहौगी ।
पैरिबो प्रेम-समुद्र पराए कराए करें कृत क्यों निबहौगी ।
हौंस मरैं सजनी सिगरी कबहूँ हरि सों हँसि बात कहौगी ।
पी-चित की चितसारी चढ़ी चित की पुतरी भई कौ लौं रहौगी ।३४।

नायक का विहृत हाव

केसवदास सों आजु सखी बृषभानुकुमारी उराहनो दीनो ।
गारि दई अरु मारि दई अरबिंदन सों मनु कै हितहीनो ।

सीख दई, सुख पाइ लई उर लाइ सुगंध चढ़ाइ नवीनो ।
उत्तरु देइ कौं नंदकुमार कछु सिर नीचे तें ऊँचो न कीनो ।३५।

विलास हाव का लक्षण

खेलत बोलत हँसत अरु, चितवत चलत प्रकास ।
जल थल केसवदास कहि, उपजत हाव बिलास ।३६।

नायिका का विलास हाव

किलकत अलिक जु तिलक-चिलक मिस,
भौंहनि में बिभ्रमनि भावभेद दीने हैं ।
लोचननि सोचन-सकोचनि नचावति है,
दसनचमक ही चकित चित्त कीने हैं ।
केसौदास मंदहास अनायास दास करि,
लीने केसौराय जिय जद्यपि प्रबीने हैं ।
मोहन के तन मन मोहिबे कौं मेरी आली,
तेरो मुख सुख ही अनंत ब्रत लीने हैं ।३७।

नायक का विलास हाव

जिन न निहारे ते निहोरत निहारिवे कौं,
काहू न निहारे जिन कैसेंहूँ निहारे हैं ।
सुर नर नाग नवकन्यनि के प्रानपति,
पतिदेवतानिहूँ कि हियनि बिहारे हैं ।
इहि बिधि केसौदास रावरे असेष अंग,
उपमा न उपजी बिरंचि पचि हारे हैं ।
रूप-मद-मोचन मदन-मद-मोचन हैं,
तीय-ब्रत-मोचन बिलोचन तिहारे हैं ।३८।

किलकिंचित हाव का लक्षण

श्रम अभिलाष सगर्ब स्मित, क्रोध हर्ष भय भाव ।
उपजत एकहि बार जहँ तहँ, किलकिंचित हाव ।३९।

नायिका का किलकिंचित हाव

कौने रसै बिहँसै लखि कौनहिं कापर कोपिकै भौंह चढ़ावै ।
भूलति लाज भटू कबहूँ कबहूँ मुख अंचल मेलि दुरावै ।
कौन की लेति बलाय, बलाय ल्यौं, तेरी दसा यह मोहिं न भावै ।
ऐसी तौ तू कबहूँ न भई अब तोहिं दई जनि बाइ लगावै ।४०।

नायक का किलकिंचित हाव

ऐसी है गोकुल के कुल की जिनि दच्छिन नैन किये अनुकूले ।
खंजन से मनरंजन केसव हास बिलास लता लगि झूले ।
बोलें झुकौ उझकौ अनबोलें फिरौ बिझुके से हिये मँहि फूले ।
रूप भए सबके बिष ऐसे ह्वै कान्ह कहौ रस कौन के भूले ।४१।

बिब्बोक हाव का लक्षण

रूप प्रेम के गर्ब तें, कपट अनादर होइ ।
तहँ उपजत बिब्बोक रस, यह जानत सब कोइ ।४२।

नायिका का बिब्बोक हाव

आवत जानि कै सोइ रही हरएँ हरि बैठे न जानि जगाई ।
साहस कै उरु माँझ धर्‌यो कर जागत रोम की रोंचि जनाई ।
नीबी बिमोचत चौंकि उठी पहिचानि झुकी बतियाँ कहि बाई ।
बासर गाइ गँवार चरावत आवत हैं निसि सेज पराई ।४३।

नायक का बिब्बोक हाव

एक समै इस गोपी सों केसव कैसहुँ हाँसी की बात कही ।
'जा कहँ तात दई तजि ताहि कहा हम सों रस-रीति नही'।
सुनि को प्रतिउत्तर देइ सखी दृग आँसुन की अवली उमही ।
उर लाइ लई अकुलाइ तऊ अधिरातक लौं हिलकी न रही ।४४।

विच्छित्ति हाव का लक्षण

भूषन भुपिवे को जहाँ, होहि अनादर आनि ।
तहाँ बिछित्ति बिचारिये, केसवदास बखानि ।४५।

नायिका का विच्छित्ति हाव

तन आपने भाए सिँगार सिँगारत हैं ये सिँगार सिँगारै बृथाहीं ।
ब्रजभूषन नैननि भूख है जाकि सु तो पै सिँगार उतारे न जाहीं ।
सब होत सुगंधनिहीं तें सुगंध सुगंध तें जाति सुगंध सुभाहीं ।
सखि तोहि तें हैं सब भूषन भूषित भूषन तें तुम भूषित नाहीं ।४६।

नायक का विच्छित्ति हाव

पान न खाए न पाग रची पलटे पट चित्त कहाँ धरिकै ।
कंठसिरी बनमाल मनोहर हार उतारे धरे अरिकै ।
चंदन चित्रनि लोपि सुलोचन लोकबिलोकनि सों लरिकै ।
अंग सुभाइ सुवास प्रकासित लोपिहौ केसव क्यों करिकै ।४७।

मोट्टाइत हाव का लक्षण

हेला लीला करि जहाँ, प्रकटत सात्विक भाव ।
बुधिबल रोकत सोभिजै, कहि मोट्टाइत हाव ।४८।

नायिका का मोट्टाइत हाव

खेलत हे हरि बागे बने जहाँ बैठी प्रिया रति तें अति लोनी ।
केसव कैसहुँ पीठि में दीठि परी कुच कुंकुम की रुचि रोनी ।
मात-समीप दुराई भले तिनि सातुक-भावनि की गति होनी ।
धूरि कपूर की पूरि बिलोचन सूँघि सरोरुह ओढ़ि उढ़ोनी ।४९।

नायक का मोट्टाइत हाव

भोजन कै बृषभानु-सभा महँ बैठे हे नंद सदा सुखकारी ।
गोप घने, बलबीर बिराजत, खात बनाई बिरी गिरिधारी ।
राधिका झाँकी झरोखे ह्वै झाँप सी लागी, गिरे मुरझाइ बिहारी ।
सोर भयो समुझे सकुचे हरुवाइ कह्यो हरि लागी सुपारी ।५०।

कुट्टमित हाव का लक्षण

केलि-कलह में सोभिजै केलि कपट पट रूप ।
उपजत हैं तहँ कुट्टमित हाव कहत कबिभूप ।५१।

प्रिया का कुट्टमित हाव

पहिले हठि रूठि चली उठि पीठि दै मैं चितई सखि तैं न लखी री ।
पुनि धाइ धरी हरिजू की भुजानि तैं छूटिबे कों बहु भाँति झखी री ।
गहिकै कुच-पीड़न दंत नखच्छत बैरिन की मरजाद नखी री ।
पुनि ताहि कों पान खवावति है उलटी कछू प्रीति की रीति सखी री ॥५२।

नायक का कुट्टमित हाव

देखत ही जिहिं मौन गही अरु मौन तजें कटु बोल उचारे ।
सौंहें कियेहूँ न सौंहों कियो मनुहारि कियेहूँ न सूधे निहारे ।
हाहा कै हारि रहे मनमोहन पाइँ परें तिहिं लातन मारे ।
मंडत हैं मुँह ताही को अंग लै हैं कछू प्रेम के पाठ निन्यारे ॥५३।

बोधक हाव का लक्षण

गूढ़ भाव को बोध जहँ, केसव औरहि होइ ।
तासों बोधक हाव सब, कहत सयाने लोइ ॥५४।

नायिका का बोधक हाव

बैठी हुती बृषभानुकुमारि सखीन की मंडली मंडि प्रबीनी ।
लै कुँभिलानो सो कंज परी इक पाइन आइ गुवारि नवीनी ।
चंदन सों छिरक्यो वह वा कहँ पान दए करुनारसभीनी ।
चंदनचित्र कपोलनि लोपिकै अंजन आँजि बिदा करि दीनी ॥५५।

नायक का बोधक हाव

सखि गोकुल गोप-सभा महँ गोबिंद बैठे हुते दुति कों धरिकै ।
जनु केसव पूरन चंद लसै चित चारु चकोरनि को हरिकै ।
तिनकों उलटो करि आनि दियो किहुँ नीरज नीर नएँ भरिकै ।
कहिं काहे तें नेकु निहारि मनोहर फेरि दियो कलिका करिकै ॥५६।

राधा राधारमण के कहे जथामति हाव ।
ढिठई केसवराय की छमियो कबि कबिराव ॥५७।

सातवाँ प्रकाश

अष्ट नायिका वर्णन

परिस्थिति-अनुसार नायिका-भेद

ये सब जितनी नाइका, बरनी मति-अनुसार ।
केसवदास बखानियै, ते सब आठ प्रकार ।१।

स्वाधिनपतिका, उत्कहीं, बासकसज्जा नाम ।
अभिसंधिता बखानियै, और खंडिता बाम ।२।

केसव प्रोषितप्रेयसी, लब्धाबिप्र सु आनि ।
अष्टानायिका ये सकल, अभिसारिका सु जानि ।३।

स्वाधीनपतिका का लक्षण

केसव जाके गुन बँध्यो, सदा रहै पति संग ।
स्वाधिनपतिका तासु कों, बरनत प्रेम-प्रसंग ।४।

प्रच्छन्न स्वाधीनपतिका

केसव जीवन जो ब्रज को पुनि जीवहु तें अति बापहि भावै ।
जापर देव-अदेव-कुमारिनि वारत माइ न बार लगावै ।
ता हरि पै तूँ गँवार की बेटी महावर पाइ झवाँइ दिवावै ।
हौं तौ बची अब हाँसिनहीं ऐसें और जौ देखै तौ ऊतरु आवै ।५।

प्रकाश स्वाधीनपतिका

चोली को सो पान तोहिं करत सँवारिबोई,
मुकुर ज्यों तोहीं बीच मूरति समानी है ।
तोहीं तियदेवता पै पायो पति केसौदास,
पतनी बहुत पतिदेवता बखानी है ।
तेरे मनोरथ भागीरथ-रथ पाछै पाछै,
डोलत गुपाल मेरे गंग को सो पानी है ।
ऐसी बात कौन जो न मानी सुनि मेरी रानी,
उनकें तौ तेरी बानी बेद की सी बानी है ।६।

उत्का नायिका का लक्षण

कौनहुँ हेत न आइयो, प्रीतम जाके धाम ।
ताकों सोचति सोचि हिय, केसव उत्का बाम ।७।

प्रच्छन्न उत्का

किधौं गृह-काज कै न छूटत सखा-समाज,
किधौं कछू आज ब्रत-बासर बिभात तैं ।
दीनो तैं न सोध, किधौं काहू सों भयो बिरोध,
उपज्यो प्रबोध किधौं उर अवदात तैं ।
सुख में न देह किधौं मोहीं सों कपटनेह,
किधौं देखि मेह अति डरे अधरात तैं ।
किधौं मेरी प्रीति की प्रतीति लेत केसौदास,
अजहूँ न आए मन सु धौं कौनी बात तैं ।८।

प्रकाश उत्का

सुधि भूलि गई, भुलए किधौं काहू कि भूलेई डोलत बाट न पाई ।
भीत भए किधौं केसव काहू सों, भेंट भई कोऊ भामिनि भाई ।
मग आवत हैं किधौं आइ गए, किधौं आवहिंगे सजनी सुखदाई ।
अब आए न नंदकुमार बिचारि, सु कौन बिचार अबार लगाई ।९।

वासकसज्जा का लक्षण

बासकसज्जा होइ सो, कहि केसव सबिलास ।
चितवै रतिगृहद्वार त्यों, पिय-आवन की आस ।१०।

प्रच्छन्न वासकसज्जा

चंदन बिटप बपु कोमल अमल दल,
कलित ललित लता लपटी लवंग की ।
केसौदास तामें दुरी दीप की सिखा सी दौरि,
दुरवति नीलबास दुति अंग अंग की ।
पौन पानी पंछी पसु बस सब्द जित जित,
होइ तित तित चौंकि चाहै चोप संग की ।
नंदलाल-आगम बिलोकें कुंजजाल बाल,
लीनी गति तेहीं काल पंजर-पतंग की ।११।

प्रकाश वासकसज्जा

भाषति है सुखबैन सखी सहुलास हियें अभिलाषनि जोहै ।
कोमल हासनि नैन-बिलासनि अंग-सुबासनि कै मन मोहै ।
मूरतिवंत किधौं तुलसी तुलसीबन में रति-मूरति को है ।
कुंज बिराजति गोपबधू कमला जनु कुंज-कुटी महिं सोहै ।१२।

अभिसंधिता का लक्षण

मान मनावतहूँ करै, मानद को अपमान ।
दूनो दुख तिन बिन लहै, अभिसंधिता बखान ।१३।

प्रच्छन्न अभिसंधिता

बार बार बोले जब बोल्यो न बालिस तब,
बालक ज्यों बोलिबे कौं कत बिललात है ।
ज्यों ज्यों परे पाइन त्यों पाहन तें पीन भयो,
होतु कहा अब कियें माखन सो गात है ।
केसौदास सब छाड़ि कियो हठ ही सों हेत,
वाहू छोड़ि जिय जिये बिन कहा जात है ।
ऐसे प्यारे पीय ही सों मान्यो न मनायो तब,
ऐसी तोहि बूझियै जु पाछें पछितात है ।१४।

प्रकाश अभिसंधिता

पाइ परेहू तें प्रीतम त्यौं कहि केसव क्योंहूँ न मैं दृग दीनी ।
तेरी सखी सिख सीखी न एकहूँ रोष ही की सिख सीखि जु लीनी ।
चंदन चंद समीर सरोज जरै दुख देह भई सुखहीनी ।
मैं उलटी जु करी बिधि मो कहँ न्यायनहीं उलटी बिधि कीनी ।१५।

खंडिता का लक्षण

आवन कहि आवै नहीं, आवै प्रीतम प्रात ।
जाके घर सो खंडिता, कहै जु बहु बिधि बात ।१६।

प्रच्छन्न खंडिता

आँखिनि जौ सूझत न काननि तौ सुनियत,
केसौदास जैसे तुम लोकनि में गाए हौ ।
बंस की बिसारी सुधिकाक ज्यों चुनत फिरौ,
जूठे सीठे सीथ सठ-ईठ दीठ ठाए हौ ।
दूरि दूरि करतहूँ दौरि दौरि गहौ पाइ,
जानौ न कुठौरु ठौरु जानि जिय पाए हौ ।
काको घर घालिबे कौं बसे कहाँ घनस्याम,
घूघू ज्यौं घुसन प्रात मेरे गृह आए हौ ।१७।

प्रकाश खंडिता

आजु कछू अँखियाँ हरि और सी मानो महावर माहँ रँगी हैं ।
मोहन मोही सी लागति मोहिं इते पर मोहन मोह लगी हैं ।
मेरी सौं मो सहुँ भानहुँ बेगि, हिये रसरोष की रीति जगी हैं ।
मेरे बियोग के तेज तचीं किधौं केसव काहू के प्रेम पगी हैं ।१८।

प्रोषितपतिका का लक्षण

जाको प्रीतम दै अवधि, गयो कौनहूँ काज ।
ताकों प्रोषितप्रेयसी, कहि बरनत कबिराज ।१९।

प्रच्छन्न प्रोषितपतिका

केसव कैसेहूँ पूरबपुन्य मिल्यो मनभावतो भाग भरचो री ।
जानै को माई कहा भयो क्योंहूँ जु औधि को आधिक द्योस टरयोरी ।
ताकहुँ तूँ न अजौं हँसि बोलै जऊ मेरो मोहन पाइ परचो री ।
काठहु तें हठ तेरो कठोर इतें बिरहानलहुँ न जरचो री ।२०।

प्रकाश प्रोषितपतिका

औधि दै आए उहाँ उनसों यह भोजन कै अब ही हम ऐहैं ।
ताकहँ तौ अब लौं बहराइकै राखी बरचाइ मरू करि मैं हैं ।
बैठे कहा इनके ढिग केसव जाउ नहीं कोउ जाइ जु कैहैं ।
जानत हौ उन आँखिनि तें अँसुवा उमहे बहुरचो पुनि रैहैं ।२१।

विप्रलब्धा का लक्षण

दूती सों संकेत कहि, लैन पठाई आप
लब्धबिप्र सो जानियै, अनआए संताप ।२२।

प्रच्छन्न विप्रलब्धा

सूल से फूल सुबास कुबास सी भाकसी से भए भौन सभागे ।
केसब बाग महाबन सो जुर सी चढ़ी जोन्ह सबै अँग दागे ।
नेह लग्यो उर नाहर सो निसि नाह घरीक कहूँ अनुरागे ।
गारी सो गीत बिरी बिष सी सिगरेई सिँगार अँगार से लागे ।२३।

प्रकाश विप्रलब्धा

देखत उदधिजात देखि देखि निज गात,
चंपक के पात कछू लिख्यो है बनाइकै ।
सकल सुगंध टारि फूल-माल तोरि डारि,
दूतिका कों मारि पुनि बीरी बगराइकै ।
लै लै दीह साँस तजि बिबिध बिलास हास,
केसौदास ह्वै उदास चली अकुलाइकै ।
सेइकै संकेत सूनो कान्हजू सों बोलि ऊनो,
मोसों कर जोरि दूनो दूनो दुख पाइकै ।२४।

अभिसारिका का लक्षण

हित तें कै मद मदन तें, पिय पै मिलै जु जाइ ।
सो कहियै अभिसारिका, बरनी त्रिबिध बनाइ ।२५।

अति सलज्ज पग मग धरै, चलत बधुन के संग ।
स्वकिया को अभिसार यह, भूषन भूषित अंग ।२६।

प्रच्छन्न प्रेमाभिसारिका

लीनो हम मोल अनबोलें आईं जान्यो मोह,
मोहिं घनस्याम घनमाला बोलि लाई है ।
देख्यो ह्वैहै दुख जहाँ देहऊ न देखी परै,
देखी केसे बाट केसौ दामिनी दिखाई है ।
ऊँचे नीचे बीच-कीच कंटकनि परे पग,
साहस गयंद गति अति सुखदाई है ।
भारी भयकारी निसि निपट अकेली तुम,
नाहीं प्राननाथ साथ प्रेम जु सहाई है ।२७।

प्रकाश प्रेमाभिसारिका

नैननि की अतुराई बैननि की चतुराई,
गात की गुराई न दुरति दुति चाल की ।

आपने चरित्रनि के चित्रत विचित्र चित्र,
चित्रिनी ज्यों सोहै साथ पुत्रिका गुवाल की ।
चंद्र के समान चारु चाय सों चढ़ाएँ फिरै,
करिकै तिहारे मृगनैननि की पालकी ।
कीजै पयपान अरु रखै पान प्रानप्यारे,
आई है जू आई अलबेली ग्वालि काल की ।२८।

प्रच्छन्न गर्वाभिसारिका

लाड़िली लीली कलोरी लुरी कहँ लाल लुके कहँ अंग लगाइकै ।
आजु तौ केसव कैसहूँ लेरुवै लागन देति न देखहु आइकै ।
बेगि चलौ उठि आई लिवावन दौरि अकेलियै हौं अकुलाइकै ।
भूलिहू गोकुल गांव में गोबिंद कीजै गरूर न गाइ चराइकै ।२९।

प्रकाश गर्वाभिसारिका

चंदन चढ़ाइ, चारु अंबर, के उर हारु,
सुमन-सिंगार सोहै आनंद के कंद ज्यों ।
वारौ कोरि रति नाथ बीन में बजावै गाथ,
मृगज मराल साथ बानी जगबंद ज्यों ।
चौंकि चौंकि चकई सी सौतिन की दूती चलीं,
सौतैं भईं दीनी अरबिंद दुतिमंद ज्यों ।
तिमिर बियोग भूले लोचन चकोर फूले,
आई ब्रजचंद चलि चंदावलि चंद ज्यों ।३०।

प्रच्छन्न कामाभिसारिका

उरझत उरग चपत चरननि फन,
देखत बिबिध निसिचर दिसि चारि के ।
गनति न लागत मुसलधार सुनत न,
झिल्लीगन-घोष निरघोष जल-धारि के ।
जानति न भूषन गिरत, पट फाटत न,
कंटक अटकि उर उरज उजारि के ।
प्रेतनि की पूछैं नारि कौन पै तैं सीख्यो यह,
जोग कैसो सारु अभिसारु अभिसारिके ।३१।

प्रकाश कामाभिसारिका

गोप बड़े बड़े बैठे अथाइन केसव कोटि सभा अवगाहीं ।
खेलत बालकजाल गलीन में बाल बिलोकि बिलोकि बिकाहीं ।
आवति जाति लुगाईं चहूँ दिसि घूँघट में पहिचानति छाहीं ।
चंद सो आनन काढ़ि कहा चली सूझत है कछु तोहिं कि नाहीं ।३२।

केसवदास सु तीन बिधि, बरनी स्वकिया नारि ।
परकीया द्वै भाँति पुनि, आठ आठ अनुहारि ।३३।

उत्तम मध्यम अधम अरु, तीन तीन बिधि जान ।
प्रकट तीन सै साठ तिय, केसवदास बखान ।३४।

उत्तमा नायिका का लक्षण

मान करै अपमान तें, तजै मान तें मान ।
पिय देखें सुख पावई, ताहि उत्तमा जान ।३५।

उदाहरण

होइ कहा अब के समुझे न तबै समुझे जब हे समुझाए ।
एक ही बंक बिलोकनि माँह अनेक अमोल बिबेक बिकाए ।
जानिपनो न जनावहु जी जनमावधि लौं उहि जानि हौ पाए ।
बातैं बनाइ बनाइ कहा कहौ लेहु मनाइ मनाइ ज्यों आए ।३६।

मध्यमा नायिका का लक्षण

मान करै लघु दोष तें, छोड़ै बहुत प्रनाम ।
केसवदास बखानियै, ताहि मध्यमा बाम ।३७।

उदाहरण

भूलेहूँ सूधे नहीं चितयो इहिं कान्ह कियो लचि लालच केतौ ।
हाहा कै हारि रहे मनमोहन पाइ परे त्यों परेई रहे तौ ।
हौं तो यहै तब ही की बिचारति होतौ गुमान क्यों याहि धौं एतौ ।
लाँबी लटैं अरु पातरी देह जु नेक बड़ी बिधि आँखि न देतौ ।३८।

अधमा नायिका का लक्षण

रूठै बारहिं बार जो, तूठै बेहीं काज ।
ताही सों अधमा सबै, कहि बरनत कबिराज ।३९।

उदाहरण

काटौं कपट्ट जु कान्ह सों कीजै री बाँटौं वे बोल कुबोल कसाई ।
फारौं जु घूँघट ओट अटै सोई दीठि फोरौं अध कों जु धँसाई ।
केसव ऐसी सखीन कों मारौं सिखै कै करैं हित की जु हँसाई ।
बारहि बार को रूसबो बारौं बहाऊँ सु बुद्धि बियोग-बसाई ।४०।

इहि बिधि नायक-नायिका बरनहुँ सहित बिबेक ।
जाति काल बय भाव तें, केसव जानि अनेक ।४१।

अगम्या नायिका

तजि तरुनी संबंध की, जानि मित्र द्विजराज ।
राखि लेइ दुख भूख तें, ताकी तिय तें भाज ।४२।

अधिक बरन अरु अंग घटि, अंत्यज जन की नारि ।
तजि बिधवा अरु पूजिता, रमियहु रसिक बिचारि ।४३।

यह संजोग सिंगार की, केसब बरनी रीति ।
बिप्रलंभ सिंगार की, रीति कहौं करि प्रीति ।४४।

आठवाँ प्रकाश

विप्रलम्भ शृंगार वर्णन

लक्षण

बिछुरत प्रीतम प्रीतमा, होत जु रस तिहिं ठौर ।
बिप्रलंभ सिंगार कहि, बरनत कबि-सिरमौर ।१।

विप्रलम्भ शृंगार के भेद

विप्रलंभ सिंगार को, चारि प्रकार प्रकास ।
प्रथम पूर्ब-अनुराग पुनि, करुना, मान, प्रवास ।२।

पूर्वानुराग का लक्षण

देखतहीं दुति दंपतिहि, उपजि परत अनुराग ।
बिन देखें दुख देखियै, सो पूरब अनुराग ।३।

नायिका का प्रच्छन्न पूर्वानुराग

फूल न दिखाव सूल फूलत है हरि बिनु,
दूरि करि माल बाल ब्याल सी लगति है ।
चँवर चलाव जिन बीजन हलाव मति,
केसव सुगंध बाय बाय-सी लगति है ।
चंदन चढ़ाव जिन ताप सी चढ़ति तन,
कुंकुम न लाव अंग आग सी लगति है ।
बार बार बरजत बावरी है वारौं आनि,
बीरी न खवाव बीर बिष सी लगति है ।४।

नायिका का प्रकाश पूर्वानुराग

केसव कैसहूँ ईठनि दीठि ह्वै दीठ परे रति-ईठ कन्हाई ।
ता दिन तें मन मेरे कों आनि भई सु भई कहि क्योंहुँ न जाई ।
होइगी हाँसी जौ आवै कहूँ कहि, जानि हितू हित बूझन आई ।
कैसे मिलौं री, मिले बिनु क्यों रहौं, नैननि हेत, हियें डर माई ।५।

नायक का प्रच्छन्न पूर्वानुराग

एक समै बृषभानसुता सजनी-गन में जननी-सँग बैसी ।
जात उन्हें चितयो जिहिं रीति सु प्रीति हियें कहि जाइ न तैसीं ।
ता दिन तें जग की जुवतीनि की लागत केसव बात अनैसी ।
चाहि फिर्‍यो चित चक्र चहूँ न कहूँ दुति देखियै वा मुख कैसी ।६।

नायक का प्रकाश पूर्वानुराग

भाँति भली बृषभानलली जब तें अँखियाँ अँखियानि सों जोरी ।
भौंह चढ़ाइ कछू डरपाई बुलाइ लई हँसि कै बस भोरी ।
केसव काहू त्यौं ता दिन तें रुचि कै न बिलोकति कैतौ निहोरी ।
लीलत है सब ही के सिंगार अँगारनि ज्यों बिन चंद चकोरी ।७।

दस दशाओं का वर्णन

अविलोकनि आलाप तें, मिलिबे कौं अकुलाहिं ।
होत दसा दस बिनु मिले, केसव क्यों कहि जाहिं ।८।

उनके नाम

अभिलाष सु चिंता गुनकथन, स्मृति उद्वेग प्रलाप ।
उन्माद ब्याधि जड़ता भए, होत मरन पुनि आप ।९।

पहली दशा-अभिलाष का लक्षण

नैन बैन मन मिलि रहें, चाहै मिलन सरीर ।
कहि केसव अभिलाष यह, बरनत हैं मतिधीर ।१०।

नायिका का प्रच्छन्न अभिलाष

सुधि बुद्धि घटी दुति देह मिटी दिनहीं दिन चाहियै बाढ़ति सी ।
कछू केसव आपने पेट की पीर दुरावति है मुख काढ़ति सी ।
बिसर्‍यो सुख भूख सखी निसि नींद परी चितचाहन आढ़ति सी ।
गिरिगो कछू गाँठि तें छूटि छबीली सु काहें तें डोरति डाढ़ति सी ।११।

नायिका का प्रकाश अभिलाष

जौ कहूँ देखें लगै दिखसाध दिखावतहीं दिनहीं दुख पैहौं ।
या ही में केसव देखियै वा तन देखिहौं देखि सखी अधिकैहौं ।
यों उनकी दूरि देखिहौं देह ज्यों आपनी देह न देखन दैहौं ।
देखिबे कौं बहरावति मोहिं सु हौं ब कहा कछु देखि ही लैहौं ।१२।

नायक का प्रच्छन्न अभिलाष

पाइ परौं बलि जाउँ मनोहर आपुन सी न करौ अब ताहू ।
देखें अघात नहीं दिन के फिरि बारक लौं अनदेखें ही जाहू ।
मो सों कही सु कही अब केसव कैसहूँ कान्ह पत्याव न काहू ।
डाढ़हुगे जु कहूँक इती रुचि तातो है नेक सिराइ धौं खाहू ।१३।

नायक का प्रकाश अभिलाष

है कोइ माई हितू इनको यह जोइ कहै किहि बाइ बहे हैं ।
न्यायहीं केसव गोकुल की कुलटा कुलनारिन नाउँ लहे हैं ।
देखि री देखि लगाइ टकी इत सोनो सो घालिकै चाहि रहे हैं ।
'को है री को' जैसे जानत नाहिन काल्हि ही वाके संदेस कहे हैं ।१४।

दूसरी दशा-चिंता का लक्षण

कैसें कै मिलियै, मिलें हरि कैसें बस होइ ।
यह चिंता चित चेत कै, बरनत हैं सब कोइ ।१५।

नायिका की प्रच्छन्न चिंता

आपुनहीं तन, आपुनो होत न देखें जाहि ।
आपुनहीं तें आपनो क्यों मन, करिहै ताहि ।१६।

नायिका की प्रकाश चिंता

प्रेम भय भूप रूप सचिव सँकोच सोच,
बिरह बिनोद पील पेलियत पचिकै ।
तरल तुरंग अवलोकनि अनंत गति,
रथ मनोरथ रहैं प्यादे गुन गचिकै ।
दुहूँ ओर परी जोर घोर घनी केसौदास,
होइ जीति कौन की को हारै जिय लचिकै ।
देखत तुम्हैं गुपाल तिहि काल उहि बाल,
उर सतरंज की सी बाजी राखी रचिकै ।१७।

नायक की प्रच्छन्न चिंता

केसौदास सकल सुबास को निवास तन,
कहि कब भृकुटिबिलास त्रास छोलिहै ।
कैसो है सुदिन बड़भागी अनुरागी जिहिं,
मेरो दृग वाके संग लागि लागि डोलिहै ।
ऐसी ह्वैहै ईस पुनि आपने कटाछ मृग-
मद घनसार सम मेरे उर ओलिहै ।
दीप के समीप पुनि दीपति बिलोकि बह,
चित्र की सी पूतरी सु क्योंहूँ हँसि बोलिहै ।१८।

नायक की प्रकाश चिंता

राधिका की जननी कों जनी कोऊ क्योंहूँ स्वयंबर बात जनावै ।
देवकुमार से गोपकुमारनि मान दै दै बृषभान बुलावै ।
केसव कैसहु बाल भली वह माल सु मेरे हियें पहिरावै ।
तोहि सखी समदै सँग वाके सु क्यों यह बात सबै बनि आवै ।१९।

तीसरी दशा-गुणकथन का लक्षण

जहँ गुनगन गुनि देहदुति, बरनत बचन बिसेषि ।
ताकहँ जानहु गुनकथन, मनमथ-मथन सु लेखि ।२०।

नायिका का प्रच्छन्न गुणकथन

कीरति सहित नित केसव कुँवर कान्ह,
केवल अकीरति नृपति सोम मानियै ।
छुवत चंपकपात कुँभिलात जात तन,
अति हरषित गात हरिजू को जानियै ।
कोमल सुबासजुत प्यारे के परम पानि,
कंटककलित नील नलिन बखानियै ।
लोचन बिसाल चारु मदनगुपालजू के,
मदन-सरनि दरसन-रस हानियै ।२१।

नायिका का प्रकाश गुणकथन

खंजन है मनरंजन केसव रंजन नैन किधौं मति जी की ।
मीठी सुधा की सुधाधर की दुति दंतन की किधौं दाड़िम ही की ।
चंद भलो मुखचंद किधौं सखि सूरति काम कि कान्ह की नीकी ।
कोमल पंकज कै पद-पंकज प्रान पियारे कि मूरति पी की ।२२।

नायक का प्रच्छन्न गुणकथन

जौ कहौं केसव सोम सरोज सुधासुर भृंगनि देह दहे हैं ।
दाड़िम के फल श्रीफल बिद्रुम हाटक कोटिक कष्ट सहे हैं ।
कोक कपोत करी अहि केहरि कोकिल कीर कुचील कहे हैं ।
अंग अनूपम वा तिय के उनकी उपमा कहँ वेई रहे हैं ।२३।

नायक का प्रकाश गुणकथन

लोचन बीच चुभी रुचि राधे की केसव क्योंहूँ सु जाति न काढ़ी ।
मानहुँ मेरें गही अनुरागनि कुंकुम-पंक अलंकृत गाढ़ी ।
मेरियै लागि रही तनुता जनु यों दुति नील निचोल की बाढ़ी ।
मेरे ही मानों हियें कहँ सूँघति यों अरबिंद दियें मुख ठाढ़ी ।२४।

चौथी दशा-स्मृति का लक्षण

और कछू न सुहाई जहँ, भूलि जाहि सब काम ।
मन मिलिबे की कामना, ताही स्मृति है नाम ।२५।

नायिका की प्रच्छन्न स्मृति

बोल्यो सुहाइ न खेल्यो हँस्यो अरु देख्यो सुहाइ न दुखख बढ़्यो सो ।
नीकियै बात सुनें समुझैं न मनौं मन काहू के मोह मढ़्यो सो ।
केसव ढूँढ़ति यों उर में मतिमूढ़ भयो गुन गूढ़ पढ़्यो सो ।
को करै साज बजावै को बीनहि या को कछू चित चाकचढ्यो सो ।२६।

नायिका की प्रकाश स्मृति

मेरे मिलाएहीं पै मिलिहौ मनमोहन सों मन मोहि न दीजै ।
मौनहि मौन बनै न कछू अब क्यों मन मानद के रस भीजै ।
ऐसेहीं केसव कैसें जियै अहो पान न खाहु तौ पान्यौ न पीजै ।
जानिहै कोऊ कहा करिहौ सब सोच न एतौ संकोच तौ कीजै ।२७।

नायक की प्रच्छन्न स्मृति

घोरि घनो घनसार घस्यो घनस्याम सु चंदन छ्वै तन तूल्यो ।
केसव कुंज को कूल चितै प्रतिकूल भयो सुभ फूलनि फूल्यो ।
भूले से डोलत बोलतहूँ उत जात कितै मन संभ्रम भूल्यो ।
जानति हौं यह काहू के आजु मनोहर हार हिंडोरनि झूल्यो ।२८।

नायक की प्रकाश स्मृति

बासन बास भए बिष केसव डासन डासन की गति लीने ।
चंदन चाँदनी त्यौं चित चाहै न चंद्रक चंद चितारस-भीने ।
पान न खात न पान करै कछु हास-बिलास बिदा करि दीने ।
ऐसी हैं गोकुल के कुल की जिहिं गोकुलनाथ के ये ढँग कीने ।२९।

पाँचवीं दशा-उद्वेग का लक्षण

दुखदायक ह्वै जात जहँ, सुखदायक अनयास ।
सो उद्वेग दसा दुसह, जानहु केसवदास ।३०।

नायिका का प्रच्छन्न उद्वेग

चंद नहीं बिषकंद है केसव राहु इहीं गुन लीलि न लीनो ।
कुंभज पावन जानि अपावन धोखें पियो पचि जानि न दीनो ।
यासों सुधाधर सेष बिषाधर नाउँ धर्‌यो बिधि है बुधिहीनो ।
सूर सों माई कहा कहियै जिन पापी लै आप-बराबर कीनो ।३१।

नायिका का प्रकाश उद्वेग

केसव कालिह बिलोकि भजी वह, आजु बिलोकें बिना सु मरै जू ।
बासर बीस बिसे बिष मींडियै, राति जुन्हाई की ज्योति जरै जू ।
पालिक तें भुव भूमि तें पालिक आलि करोरि कलालि करै जू ।
भूषन देहु कछु ब्रजभूषन देह को हेरि हरै जू ।३२।

नायक का प्रच्छन्न उद्वेग

मेघनि ज्यों हँसि हंस न हेरत हंसनि ज्यों घनरूप न पीवैं ।
कंजनि ज्यों चित चंद न चाहत चंद ज्यों कंजनि क्योंहूँ न छीवैं ।
ताल तें बागिन बाग तें तालनि ताल तमाल की जात न सीवैं ।
कैसी हैं केसव वे जुवतीं सुनि ऐसी दसा पिय की पल जीवैं ।३३।

नायक का प्रकाश उद्वेग

सोचि सखी भरि लेत बिलोचन, काँपत देखत फूले तमालहि ।
भूले से डोलत बोलत नाहिंन बाग गए किधौं तेरे ही तालहि ।
देख्यो जौ चाहति देखि न आवति ऐसे में हौं न दिखैहौं री लालहि ।
आजु कहा दिखसाध लगी जब देख्यो सुहाइ कछू न गुपालहि ।३४।

छठी दशा-प्रलाप का लक्षण

भँवत रहै मन भौंर ज्यों, है तन-मन-परिताप ।
बचन कहै प्रिय पक्ष सों, तासों कहत प्रलाप ।३५।

नायिका का प्रच्छन्न प्रलाप

खेल न हाँसी न खोरि अठाउ न हेत न बैर हियो कँपै रोसों ।
लेनो न देनो हलाव भलाव न नातो न गोतो कहाँ कहाँ तोसों ।
आनि दियो दुख में दुख केसव कैसे हँसौ री कहा कहि कोसों ।
नैन भरिभरि ग्वालि कहै अरी देख्यो तैं कान्ह कहा कह्यो मोसों ।३६।

नायिका का प्रकाश प्रलाप

आलिनि माँझ मिली हुती खेलति जानै को कान्ह धौं आए कहाँ तैं ।
डीठिहि डीठि पर्‌यो न कछू सठ ढीठ गही हठि पीठि की घातैं ।
गई गड़ि लाजनहीं हिय हौं तो उठी जरि केसव काँपति यातैं ।
इती रिस मैं कबहूँ न बची पै रही पचि हौं अँखियान के नातैं ।३७।

नायक का प्रच्छन्न प्रलाप

नील निचोल दुराई कपोल बिलोकति ही करि ओलिक तोही ।
जानि परी हँसि बोलति भीतर भाजि गई अवलोकत मोही ।
बूझिबे की जक लागी है कान्हहि केसव कै रुचि रूप-लिलोही ।
गोरस की सौं बबा की सौं तोहि कि बार लगी कहि मेरी सौं कोही ।३८।

नायक का प्रकाश प्रलाप

मोहन मरीचिका सो हास, घनसार को सो
बास, मुख रूप की सी रेखा अवदात हैं ।
केसौदास बेनी तौ त्रिबेनी सी बनाइ गुही,
जामें मेरे मनोरथ मुनि से अन्हात हैं ।
नेह उरझे से नैन देखिबे कौं बिरुझे से,
बिझुकी सी भौंहैं उझके से उरजात हैं ।
लोचन कमल चारु तिन पर पाइ देति,
तेरे घर आई आजु कहि कैसी बात हैं ।३९।

सातवीं दशा-उन्माद का लक्षण

तरकि उठै पुनि उठि चलै, चितै रहै मुख देखि ।
सो उन्माद जनावहीं, रोवै हँसै बिसेषि ।४०।

नायिका का प्रच्छन्न उन्माद

केसव सुधि बुधि हरित सु तुम बिन बिथा अगाध राधिकहि बाढ़ी ।
छूटी लट लटकति कटितट लौं चितवति नीठि नीठि करि ठाढ़ी ।
तरकति तकि तोरति तन तलफति अति अपार उपचारनि डाढ़ी ।
सकसकाति लै साँस अचेत सुचेतहु प्रेम-प्रेत गहि गाढ़ी ।४१।

नायिका का प्रकाश उन्माद

केसव चौंकति सी चितवै छतिया घरकै तरकै तकि छाँहीं ।
बूझियै और कहै मुख और सु और की और भई पल माँहीं ।
डीठि लगी किधौं बाय लगी मन भूलि पर्‌यो कै कर्‌यो कछु काँहीं ।
घूँघट की घट की पट की हरि आजु कछू सुधि राधिकै नाँही ।४२।

नायक का प्रच्छन्न उन्माद

गूढ़ अगूढ़ प्रकासत बातनि लोक अलोक की बात सरी सी ।
रोवत हैं कबहूँ हँसि गावत नाचत लाज की छाँडि छरी सी ।
काहू को सोच सँकोच न केसव देखत आवति देह मरी सी ।
बाम की बाय कि काम की बाय कि है हरि की मति काहू हरी सी ।४३।

नायक का प्रकाश उन्माद

सजल चकित चित चितवत चहूँ दिसि,
चाहि चाहि रहैं मुख चपल चलत धाइ ।
सोचत से मन मन कंपत तपत तन,
केसौदास रोवत हँसत उठैं गाइ गाइ ।
चलहि दिखाऊँ तोहि देखतहीं भयो मोहिं,
भयो सो कहन आई तोसों अलि अकुलाइ ।
जैसें कछु आकबाक बकत हैं आजु हरि,
तैसें जिन नाउँ मुख काहू को निकसि जाई ।४४।



श्री कृष्ण को प्रकाश उद्वेग, मेवाड़, राजस्थान, लगभग 1640 ई०, राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली



राधा और कृष्ण स्वयं को आरसी में निहारते हुये, गढ़वाल, पहाड़ी, लगभग 1790 ई०, राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

आठवीं दशा-व्याधि का लक्षण

अंग-बरन बिबरन जहाँ, अति ऊँचे उस्वास ।
नैननीर परिताप बहु, ब्याधि सु केसवदास ।४५।

नायक-नायिका की प्रच्छन्न व्याधि

बेंनु तज्यो उनि, बैन तें बोलौ न बोल, बिलोकत बुद्धि भगी है ।
वे न सुनें समुझें तूँ न बातहि प्रेत लग्यो किधौं प्रीति जगी है ।
केसव वे तुहि तोहि रटैं रट तोहि इतै उनहीं की लगी है ।
वे भखैं पान न, पान्यौ न तूँ सु तैं कान्ह ठगे कि तूँ कान्हठगी है ।४६।

नायक-नायिका की प्रकाश व्याधि

ह्याँ उनके तनताप तें तापियै, ह्याँ इनके उपचार जुड़ैयै ।
ह्याँ उनके उड़ि जैयै उसासनि, ह्याँ इनके असुवानि अन्हैयै ।
केसव वै नँदलालन ये बृषभान-लली पै निदान न पैयै ।
एकहि बेर दुहूँनि कहा भयो माई री तूँ चलि देखन जैयै ।४७।

नौवीं दशा-जड़ता का लक्षण

भूलि जाइ सुधि बुधि जहाँ, सुख दुख होई समान ।
तासों जड़ता कहत हैं, केसवदास सुजान ।४८।

नायिका की प्रच्छन्न जड़ता

खरे उपचार खरी सियरी सियरे तें खरोई खरो तन छीजै ।
ऐसे में और करें तें कछू उपजै तौ सकेलि कहा हम लीजे ।
देखत हौ यह कामकली कुँभिलानियै जाति कहा अब कीजे ।
कौन पै जाऊँ, कहा करौं केसव कैसें जियै वह क्यों हम जीजै ।४९।

नायिका की प्रकाश जड़ता

अँखियानि मिली सखियानि मिली
पतियाँ बतियानि मिली तजि मौनैं ।
ध्यान-बिधान मिली मनहीं मन
ज्यों मिलै राँक मनौं मन सौनैं ।
केसव कैसहुँ बेगि चलौ नतु
ह्वैहै वहै हरि जो कछु हौनैं ।
पूरन प्रेम-समाधि लगे मिलि
जैहै तुम्हैं मिलिहौ तब कौनैं ।५०।

नायक की प्रच्छन्न जड़ता

पल ही पल सीतल होत सरीर बिचारे सबै उपचार निदानैं ।
जौ करियै तन मंडन खंडन चित्त कछू सुख दुख्ख न आनैं ।
केसव कान्ह सुने समुझें नहिं, बूझियै कौनहिं को पहिचानैं ।
जोग लियो कै बियोग है काहू को लोग कहाँ इन रोगनि जानैं ।५१।

नायक की प्रकाश जड़ता

कान्ह के आसन बासनहीन हुतासन-मीत को प्रासन कीजे ।
केसव इंद्रिय सोधि सबै मन साधि समाधिनि के रस भीजै ।
जौ लौं भए हरि सिद्ध प्रसिद्ध न तौ लौं बिलोकि अलोक न कीजे ।
देवी करैं तप तो लगि वै बरदान न जौ जिय-दान तौ दीजै ।५२।

दसवीं दशा-मरण का लक्षण

बनै न क्योंहूँ मिलन जहँ, छलबल केसवदास ।
पूरन-प्रेम-प्रताप तें, मरन होत अनयास ।५३।

मरन सु केसवदास पै, बरन्यो जाइ न मित्र ।
अजर अमर जस कहि कहौं, कैसे प्रेत-चरित्र ।५४।

रति उपजै रमनीन के, पहिलें केसवदास ।
तिनकी इंगित देखि सखि, करत सुप्रेम-प्रकास ।५५।

अति आदर अति लोभ तें, अति संगति तें मित्त ।
साधुनिहूँ के होत हैं, केसव चंचल चित्त ।५६।

सुभग दसा दस मैं कही, उपजै पूरन राग ।
जिहि बिधि उपजै मान मन, बरनौं सुनहु सभाग ।५७।

नौवाँ प्रकाश

मान वर्णन

लक्षण

पूरन-प्रेम-प्रताप तें, उपजि परत अभिमान ।
ताकी छबि के छोभ तें, केसव कहियत मान ।१।

मान के भेद

प्रकटहि पिय प्रति मानिनी, गुरु लघु मध्यम मान ।
प्रकटहिं पीय प्रियानि प्रति, केसवदास सुजान ।२।

गुरु मान का लक्षण

आन नारि के चिन्ह लखि, अरु सुनि स्रवननि नाउँ ।
उपजत है गुरुमान तहँ, केसवदास सुभाउँ ।३।

नायिका का प्रच्छन्न गुरु मान

आजु मिले बृषभानुकुमारिहि नंदकुमार बियोग बितैके ।
रूप की रासि रस्यो रस केसव हास-बिलासनि रोस रितैकै ।
बागे के भीतर देखि हियें नख नैन नवाइ रही सु इतै कै ।
फूलिहि में भ्रमि भूलि मनों सकुचे सरसीरुह चंद चितैकै ।४।

नायिका का प्रकाश गुरु मान

बूझति ही वह गोपी गुपालहि आजु कछू हँसिकै गुनगाथहिं ।
ऐसे में काहू को नाम सखी कहि कैसे धौं आइ गयो ब्रजनाथहिं ।
खात खवावति ही जु बिरी सु रही मुख की मुख हाथ की हाथहिं ।
आतुर ह्वै उनि आँखिन तें अँसुवा निकसे अखरान के साथहिं ।५।

नायक के प्रच्छन्न गुरु मान का लक्षण

लोकलीक उल्लंघि कछु, प्रिया कहै जब बैन ।
उपजि परत गुरु मान तहँ, प्रीतम के उर ऐन ।६।

नायक का प्रच्छन्न गुरु मान

ऐसी ऐसी रति राचे सौंहनि के साँचे स्याम,
देखौ आनि बाँचि किधौं कौन की ये चीठी है ।
सुनहु सभाग पाई रावरीयै पाग माहँ,
कागर के रूप काहू आगि की अँगीठी है ।
जानति हौं याहीं मग पायो है जनम जग,
औरहूँ अलोकन की बीथी तुम दीठी है ।
काहे कौं कहावत कटुक कालकूट ऐसी,
कह्यो हरि हरें हँसि हमकों तौ मीठी है ।७।

नायक का प्रकाश गुरु मान

आपने सों आपने ही आगें कहियत किधौं,
खोरि के खजाने खोरि ही में खोलियत है ।
डीठिहू तौ रोकियत जौ पै कहूँ जाइ केसौ,
और कहा नैन लै छुरी सो छोलियत है ।
बेई घनस्याम जिन बिन घनी घरनीनि,
घरिक में घने घनसार घोलियत है ।
बोलति हौ कैसें ऐसें बोलौ जैसें बोलियत,
मोलहू लए सों ऐसे बोल बोलियत है? ।८।

लघु मान का लक्षण

देखत काहू नारि-त्यौं, देखै अपने नैन ।
तहँ उपजत लघुमान कै, सुनें सखी के बैन ।९।

नायिका का प्रच्छन्न लघु मान

कान्ह तिहारी वा प्रानप्रिया कें अयान सयान सबै मन माहीं ।
मान किधौं अपमान अबै यह मानस पै अनुमाने न जाहीं ।
सुख दुख्ख न केसव जानि परै समुझै रिस हास न हाँ अरु नाहीं ।
यों खिन ही सियरी खिन ताती है ज्यों बदलै बदरानि की छाहीं ।१०।

नायिका का प्रकाश लघु मान

झूठहूँ न रूठियै री ईठ सों इतै कहा ब,
नेक पीठ देत ईठ कौन के भए अली ।
कालि केतौ नंदलाल मोसों घालि लालि करैं,
कालि ही न आई ग्वारि जौ पै तूं हुती भली ।
आजुहीं जु बीच परी बीच पारिबे कौं माई,
आन रंग आन भाँति ज्यों कनेर की कली ।
तेरे ही कहे की कोऊ साखि है जु बूझियै री,
देखियै जु आँखि ताकी साखि की कहा चली ।११।

प्रिय के प्रच्छन्न लघु मान का लक्षण

प्रिय को कह्यो करै नहीं, प्रिया कौनहूँ काज ।
उपजत है लघुमान तहँ, बरनि कहत कबिराज ।१२।

प्रियतम का प्रच्छन्न लघु मान

आगें कहा करिहौ अबहीं तें इतो दुख दीनो कह्यो बिनु कीनें ।
केसव कौनहु लाज की लाड़ तें भूलि गई तौ भए हित हीनें ।
भेटे नहीं भरि अंक लला भरि जीभ न बोली जु बोल नवीनें ।
देखे नहीं कबहूँ भरि आँखिनि आजुहिं कैसें चलै चित लीनें ।१३।

प्रिय का प्रकाश लघु मान

बोलि ज्यों आए त्यों बोलत नाहिनै मोसों कहा कछु चूक तिहारी ।
केसव कैसहूँ देखे सुने बिन जानै कहा कोऊ जी की यहाँ री ।
खीर सिराइ न जानत खाइ, नई यह भूख की भाँति निहारी ।
काँचि ही दाखहि चाहत चाख्यो सु अंत तऊ तुम कुंजबिहारी ।१४।

मध्यम मान का लक्षण

बात कहत पिय और सों, देखै केसवदास ।
उपजत मध्यम मान तहँ, मानिनि के सबिलास ।१५।

प्रिया का प्रच्छन्न मध्यम मान

कहौ कान्ह कहाँ सिगरी निसि नासी सु तौ तुमहीं कहँ चाहतहीं ।
तनु में तनु रेख लिखी किहि केसव कंटक कानन गाहतहीं ।
कछू राती सी आँखि कहा भई ताती तिहारे बियोग के दाहतहीं ।
हिय-बंचक-रीति रची जब रंचक लाइ लई उर नाह तहीं ।१६।

प्रिया का प्रकाश मध्यम मान

सखि ज्यों उनकों तू बकावति मोहूँ कों आई बकावन ह्वै गरई ।
अब याही तें तोसहूँ बात कछू कहिबे कों हुती न कही परई ।
कहि केसव आपनी जाँघ उघारिकै आपही लाजनि को मरई ।
इक तौ सब तें हरए हरि हैं अब होहुँ कहा हरि तें हरई ।१७।

प्रियतम के मध्यम मान का लक्षण

जहाँ न मानै मानिनी, हारै पिय जु मनाइ ।
उपजत मध्यम मान तहँ, प्रीतम के उर आई ।१८।

प्रिय का प्रच्छन्न मध्यम मान

बार बार बरजी मैं सारस सरस मुखी,
आरसी लै देखि मुख आरस में बोरिहै ।
सोभा के निहोरे तें निहारति न नेकहूँ तूँ,
हारी हैं निहोरि सब कहा काहू खोरिहै ।
सुख को निहोरो जु न मान्यो सो भली करी तैं,
केसौदास की सौं ताहि जौ तूँ मुहँ मोरिहै ।
नाह के निहोरें किन मानहि निहोरति हौं,
नेह के निहोरें फिर मोहीं जु निहोरिहै ।१९।

प्रिय का प्रकाश मध्यम मान

मानहिं मान तें मानिनि केसव मानस तें कछु मान टरैगो ।
मान रहै सु जु मानै नहीं परिमान नखें अभिमान भरैगो ।
ह्वैहै सहेली समान तबै जब सौतिन में अपमान करैगो ।
आपु मनावत मानहि री, बहुर्यो जु मनावन तोहि परैगो ।२०।

राधा राधा-रवन के, बरने मान समान ।
तिनको मान मनाइबो, कहियत सुनौ सुजान ।२१।

दसवाँ प्रकाश

मानमोचन वर्णन

मानमोचन लक्षण

मान तजहि प्रीतम प्रिया, कहि केसव करि प्रीति ।
बरनि सुनाऊँ सुनहु सब, मैं जु सुनी षट रीति ।१।

मानमोचन के छः उपाय

साम दान भनि भेद पुनि, प्रनति उपेच्छा मानि ।
पुनि प्रसंगबिध्वंस अरु, दंड होइ रस-हानि ।२।

प्रथम उपाय-साम का लक्षण

ज्यों क्योंहूँ मन मोहियै, छूटि जाइ जहँ मान ।
सोई साम उपाय कहि, केसवदास बखान ।३।

प्रिया के प्रति साम उपाय

केसवदास सदा कियें आस रहै सुख की दुख ताहि न दीजै ।
ताहू सों रोष न मानियै मानिनि भूलिहुँ आपनो मानि सु लीजै ।
हौं तुमहीं तुम हौं सुनि सुंदरि मूरति द्वै जिय एकहीं जीजै ।
मान है भेद को मूल महा अपने सहुँ सो सपनेहुँ न कीजै ।४।

प्रियतम के प्रति साम उपाय

कहि आवति है जो कहावत हौ तुम, नाहीं तौ ताकि सकै हम सौंहीं ।
तिहिं पैड़ें कहा चलियै कबहूँ जिहिं काँटो लगै पग पीर दुकौंहीं ।
प्रीति कुम्हेंड़े की जैहै जई सम, होति तुम्हैं अँगुरी पसरौंहीं ।
कीजै कछू यह जानिकै केसव हौं तुमहीं तुम तौ हरि हौंहीं ।५।

दूसरा उपाय-दान का लक्षण

केसव कौनहुँ ब्याज-मिस, दै जु छटावै मान ।
बचन-रचन मोहै मनहिं, तासों कहियै दान ।६।

जहाँ लोभ तें दान लै, छाँडै मानिनि मान ।
बारबधू के लच्छनहिं, पावै तबहि प्रमान ।७।

नायक का दान उपाय

कोमल अमल दल दीने हे कमल-भव,
अरुन अरुन प्रभुजू कौं सुखदाइयै ।
केसौदास सोभाधर सधर सुधा के धर,
मधुर अधर उपमा तौ इनि पाइयै ।
उरज-मलय-सैल-सील सम सुनि देखि,
अलक-बलित-ब्याल आसा उरझाइयै ।
निपट निगंध यह हार बंधुजीव को सु,
चाहत सुगंध भयो नेक ग्रीव नाइयै ।८।

दूसरा उदाहरण

मत्तगयंदनि साथ सदा इनि थावर जंगम जंतु बिदार्‍यो ।
ता दिन तें कहि केसव बंधन बेधन कै बहुधा बिधि मार्‍यो ।
सो अपराध सुधारन सोधि यहै इनि साधन साधु बिचार्‍यो ।
पावन-पुंज तिहारो हियो यह चाहत है अब हार बिहार्‍यो ।९।

प्रिया का दान उपाय

हँसति हँसति आई आनि इक गाथा गाई,
कहहु कन्हाई याको भाउ समझाइकै ।
पीबें क्यों अधर-मधु दंपति एक ही बार,
रदन करज थल दीजहि बताइकै ।
यह परिरंभन कहावै कौन केसौदास,
मेरी सौं जौ मोसों तुम राखहु दुराइकै ।
राधिका की अधिकाई कहा कहौं लीनो आजु,
आपनो पियारो पीउ आपुहीं मनाइकै ।१०।

तीसरा उपाय-भेद का लक्षण

सुख दैकै सब सखिनि कहँ, आपु लेइ अपनाइ ।
तब सु छुड़ावै मान कों, बरनौं भेद बनाइ ।११।

नायिका के प्रति भेद उपाय

केसव धाइ खवासिनि तोहि सखी सकुचैं सब आपनी घातैं ।
मोहिं तौ माई कहेहीं बनै अब बाँधि दई बिधि तो कहँ तातैं ।
नेक हरें हरें बोलि बलाइ ल्यौं हौं डरपौं गड़ि जाइ न जातैं ।
माखन सो मेरे मोहन को मन काठ सी तेरी कठेठी ये बातैं ।१२।

नायक के प्रति भेद उपाय

काहूँ कह्यो 'हरि रूठि रहे' तब तें बहु बुद्धि बितर्क बढ़ावै ।
सोधि सबै अपनो सो रही धन मीत रहैं सु उपाय न पावै ।

ह्वाँ वह रीति इहाँ यह केसव ज्यों दुहुँ ओर जरे को जरावै ।
बूझति हौं पिय प्यारी तिहारी सु मान करै कि मनावन आवै ।१३।

चौथा उपाय-प्रणति का लक्षण

अति हित तें अति काम तें, अति अपराधहिं जानि ।
पाइ परै प्रीतम प्रिया, ताकों प्रनति बखानि ।१४।

नायिका के प्रति प्रेम-प्रणति उपाय

तैं चितयो जु न सूधे तऊ जऊ प्रेम ककै पिय पाउ गह्यो हो ।
मोहिं बिलोकि बिलोकि अलीन, अलीक अलोक-प्रवाह बह्यो हो ।
बूझति हौं सखी सीस दियें तिनु और सबै हिय हेतु रह्यो हो ।
कान्हहि आएँ मनावन तोसों में मान किधौं अपमान कह्यो हो ।१५।

नायिका के प्रति काम-प्रणति उपाय

बोलति नाहिं बुलाएँहुं बोल कहा लगी मोहिं बकाएहीं मारन ।
सो पर्‍यो पाइनि बूझि सखी सब देति हैं ज्यों जुवती जिहि कारन ।
हठु छाँड़िकै कंठ लगाइ उठाइ कहा लगी ऐंठि अकास निहारन ।
कौनें भए नहिं द्वै दिन ए दिन तू ही लगी कछु ऊलट पारन ।१६।

नायिका के प्रति अपराध-प्रणति उपाय

केसवदास उदास भई दरसाइ दसा-दुख द्योस भर्‍यो री ।
राति भए अधिरातकहू लौं बिनै बहु बंधुबधूनि कर्‍यो री ।
धाइ रही समुझाइ कछू न सखीनिहूँ के सिखए तें सर्‍यो री ।
काहे तें मान्यौ न मानिनि तौलगि जौलगि पाइ न पीउ पर्‍यो री ।१७।

पियहि मनावै पाइ परि, प्रिया परम हित मानि ।
नापराध नहिं काम तें, बरनत ही रस-हानि ।१८।

प्रिय के प्रति प्रणति उपाय

नीरहिं तौ बिन मीन सरै, अरु मीन तौ नीरहिं के जिय जीजै ।
जा बिन और सुहाइ न केसव ताहि सुहाइ सु तौ सब कीजै ।
जा लगि मो पग लागत हे सु लगी पग अंक लगाइ न लीजै ।
हौं सिखऊँ अपनें सपनेंहूँ तौ आवत लच्छि किवार न दीजै ।१९।

पाँचवाँ उपाय-उपेक्षा का लक्षण

मान-मुचावन बात तजि, कहिये और प्रसंग ।
छूटि जात जहँ मान सो, कहत उपेच्छा अंग ।२०।

प्रिया के प्रति उपेक्षा उपाय

चपला न चमकति चमक हथ्यारन की,
बोलत न मोर बंदी सयन-समाज के ।
जहाँ तहाँ गाजत न बाजत दमामे दीह,
देत न दिखाई दिनमनि लीने लाज के ।
चलि चलि चंदमुखी साँवरे सखा पै बेगि,
सोषक जु केसौदास अरि-सुख-साज के ।
चढ़ि चढ़ि पवन-तुरंगनि गगन घन,
चाहत फिरत चंद जोधा तमराज के ।२१।

प्रिय के प्रति उपेक्षा उपाय

केसौदास दिनराति केतकी की भावै भाँति,
जिय में बसति जाति नैननि में नलिनी ।
माधवी को पीवै मधु सूझत न अंध कहँ,
सेवती सेवन कही सेई गंधफलिनी ।
और हौं कहति बात कान्ह काहे कों लजात,
ऐसे तौ खिस्याइ सो जु होइ मनमलिनी ।
देखौ नहीं प्रानपति निलज अली की गति,
मालती सों मिल्यो चाहै लियें साथ अलिनी ।२२।

छठा उपाय--प्रसंग-विध्वंस का लक्षण

उपजि परै भय चित्तभ्रम, छूटि जाइ जहँ मान ।
सो प्रसंगबिध्वंस कबि, केसवदास बखान ।२३।

प्रिया के प्रति प्रसंग-विध्वंस उपाय

केकी न केसव काम के किंकर बोलत डोलत देत दुहाई ।
कामनिसा यह कामिनि कोऊ रिसाइगी तासहुँ ह्वैहै रिसाई ।
गाजति नाहिंन मेघघटा यह बाजति डौंडी सखी सुखदाई ।
भोर भएँ फिरि कीबौ अबोलौ सु बौलौ अबै बलि बोलि कन्हाई ।२४।

प्रिय के प्रति प्रसंग-विध्वंस उपाय

कोकनि की कारिका कहति काहू सारिका सों,
दुरि दुरि हित चित चौगुनो चढ़ायो है ।
सूकि रही सकुचनि बापुरी सुकी तौ, कहि
काहू सों सकै न देह दुखनि डढ़ायों है ।
उठि चलौ न्याउ कीजै अब कैं मनाइ दीजै,
नीकें ही में केसौदास कलह बढ़ायो है ।
मानत न एते पर उलटि मनावै वह,
ऐसो ही सयान स्याम सुकहि पढ़ायो है ।२५।

देश काल बुधि बचन तें, कल धुनि कोमल गान ।
सोभा सुभ सौगंध तें, सुख ही छूटत मान ।२६।

घननि की घोर सुनि, मोरनि को सोर सुनि,
सुनि सुनि केसव अलाप अलीजन को ।
दामिनी दमक देखि देह की दिपति देखि,
देखि सुभ-सेज देखि सदन सुबन को ।
कुंकुम की बास, घनसार की सुबास भयो,
फूलनि की बास, मन फूलिकै मिलन को ।
हँसि हँसि बोले दोऊ, अनहीं मनाएँ मान,
छटि गयो एकै बार राधिकारमन को ।२७।

इहिं बिधि मान छुड़ावहीं, आपुस में नर नारि ।
पल पल प्रीति बढ़ावहीं, केसवदास बिचारि ।२८।

प्रिया न प्रीतम सों करै, अति हठ केसवदास ।
बहुरयौ हाथ न आवई, जौ ह्वै जाई उदास ।२९।

बारहिं बार न कीजियै, बारक कीजै मान ।
कहि केसव ज्यों आप में, सदा बढ़ै सनमान ।३०।

प्रीति बिना भय होय नहिं, भय बिन होइ न प्रीति ।
प्रीति रहै जहँ भय रहै, यहै मान की रीति ।३१।

गर्ब, ब्यसन, धन-त्याग तें, निष्ठुर बचन प्रवास ।
लालन बिप्रियकरन तें, पिय तें होइ उदास ।३२।

मान बिबिध बरने बिबुध, जहाँ बिबिध बुधिबास ।
केसव करुना करि कछू, कहियत बिरह-प्रवास ।३३।

ग्यारहवाँ प्रकाश

करुण विरह वर्णन

करुण विरह

छूटि जात केसव जहाँ, सुख के सबै उपाय ।
करुनारस उपजत तहाँ, आपुन तें अकुलाय ।१।

सुख में दुख क्यों बरनियै, यह बरनत ब्यौहार ।
तदपि प्रसंगहि पाइ कछु, बरनत मति-अनुसार ।२।

नायिका का प्रच्छन्न करुण विरह

मैं पठई मति लेन सखी सु रही मिलिकै मिलिबे कहँ आनै ।
जाइ मिले दिन ही दृग-दूत दयाल सों देहदसा न बखानै ।
प्रेरत पैज कियें तन प्राननि जोग के और प्रयोग निदानै ।
लाज तें बोलन पाऊँ न केसव ऐसें ही कोऊ कहा दुख जानै ।३।

प्रिया का प्रकाश करुण विरह

हरित हरित हार हेरत हियो हरत,
हारी हौं हरिननैनी हरि न कहूँ लहौं ।
बनमाली ब्रज पर बरषत बनमाली,
बनमाली दूर दुख केसव कैसें सहौं ।
हृदय-कमल-नैन देखिकै कमल नैन,
होहुँगी कमलनैनि और हौं कहा कहौं ।
आप घने घनस्याम घनहीं से होत घन,
सावन के द्योस घनस्याम बिन क्यों रहौं ।४।

प्रिय का प्रच्छन्न करुण विरह

जैसें मिल्यो प्रथम स्रवन-मग जाइ मन,
रवन भवन कीने अलिक अलक में ।
मन मिलें मिले नैन केसौदास सबिलास,
छबि-आस भूलि रहे कपोल-फलक में ।
नैन मिलें मिल्यो ज्ञान सकल सयान सजि,
तजि अभिमान भूल्यो तन की झलक में ।
तैसें छल बल साधि राधिकै मिलन कहँ,
चाहत कियो पयान प्रानहूँ पलक में ।५।

प्रिय का प्रकाश करुण विरह

है तरुनाई तरंगिनि-पूर अपूरब पूरबराग रँगे पय ।
केसवदास जिहाज मनोरथ, संभ्रम बिभ्रम, भूरि भरे भय ।
तर्क तरंग तरंगित तुंग तिमिंगिल सूल बिसालनि के चय ।
कान्ह कछू करुनामय हे सखि तैं ही किये करुना-बरुनालय ।६।

प्रवास-विरह का लक्षण

केसव कौनहु काज तें, पिय परदेसहिं जाइ ।
तासों कहत प्रवास सब, कबि कोबिद समुझाइ ।७।

प्रिया का प्रच्छन्न प्रवास-विरह

तूँ करिहै कहि धौं कब गौनहि नंदकुमार तौ गौन कियोई ।
मोहि महा डर तो उर को न रहै लटि लै जिनि को धौं लियोई ।
ऐसी न बूझियै केसव तोहि बिचारै जु बीच बिचार बियोई ।
तेरे ही जीय जियै जिनको जिय रे जिय ता बिन तू ब जियोई ।८।

प्रिया का प्रकाश प्रवास-विरह

कौन कें न प्रीति, को न प्रीतमहिं बिछुरत,
याही कें अनोखो पतिब्रत गाइयत है ।
केसौदास जतन कियें ही भलें आवै हाथ,
और कहा पच्छिनि के पाछें धाइयत है ।
उठि चलि जौ न मानै काहू की बलाइ जानै,
मानसै जु पहिचानै ताकें आइयत है ।
याकें तौ है आजु ही मिलौं कि मरि जाउँ ऐसें,
आगि लागें मेरी माई मेह पाइयत है ।९।

प्रिया का विरह-भयविभ्रम

कोकिल केकी कुलाहल हूल उठी उर में मति की गति लूली ।
केसव सीत सुगंध समीर गयो उड़ि धीरज ज्यों तन तूली ।
जै मुनि जै मुनि कै बची जोन्ह की जामिनी, पै न अजौं सुधि भूली ।
क्यों जियै कैसी करौं बहुर्‍यौ बिष सी बिसनी बिसवासिनी फूली ।१०।

प्रिय का प्रच्छन्न प्रवास-विरह

जिनि बोलि सुबोल अमोल, सबै अँग केलिकलोलनि मोल लिये ।
जिनिको चित लालची लोचन रूप अनूप पियूष सु पीय जिये ।
जिनके पद केसव पानि छियें सुख मानि सबै दुख दूरि किये ।
तिनको सँग छूटत ही फिटु रे फटि कोटिक टूक भयो न हिये ।११।

प्रिय का प्रकाश प्रवास-विरह

केसव क्योंहूँ चलैं चलि कोरि सँदेस कहै फिरि पैंडक दू पर ।
आगें धरैं अपनो सो कै साहस पाछेहीं पेलि परैं पग भू पर ।

होत जहीं तहीं ठाढ़े ठगे से चलौ न कह्यो परै कान्ह हितू पर ।
लोक की लाज फिरयो न परै पै मिलान करैं अधकोसक ऊपर ।१२।

प्रिय का विरह-भयविभ्रम

प्रेत की नारि ज्यों तारे अनेक चढ़ाइ चलै चितवै चहुँघातो ।
कोढ़िनि सी ककुरे कर कंजनि केसव सेत सबै तन तातो ।
भेटतहीं बरहीं अबही तौ बरयाइ गई ही सुखै सुख सातो ।
कैसी करौं कहि कैसें बचौं बहुरयौ निसि आई कियें मुँह रातो ।१३।

प्रिया की निद्रा

आएँ तें आवैगीं आँखिनि आगेंही डोलिहै मानहु मोल लई है ।
सोवै न सोवन देइ न यों तब सोवन में उन साथ दई है ।
मेरियै भूलि कहा कहौं केसव सौति कहूँ तें सहेली भई है ।
स्वारथ ही हितु है सबकें, परदेश गएँ हरि नींदौ गई है ।१४।

प्रिय की निद्रा

केसव कैसहूँ कोरि उपाइन आनि सु तौ उर लागति है ।
चकचौंधत सी चितवै चित में चित सोवतहूँ महँ जागति है ।
परदेस प्रिया पल मोहिं पत्याति न जानै को याकी कहा गति है ।
तजि नैननि नींद नवोढ़बधू लहुँ आधिक राति तें भागति है ।१५।

प्रिया का का विरह-निवेदन

केसव कुँवर बृषभानु की कुँवरि आजु,
देवता ज्यों बन उपवन बिहरति है ।
कमला ज्यों थिर न रहति कहूँ एक छिन,
कमलाग्रजा ज्यों कमलनि तें डरति है ।
काली ज्यों न केतकी के फूल रुचैं, सीता जू ज्यों
निसिचर-मुख तिन देखे ही जरति है ।
बदन उघारतहीं मदन-सुयोधनहीं,
द्रौपदी ज्यों नाम मुख तेरो ही ररति है ।१६।

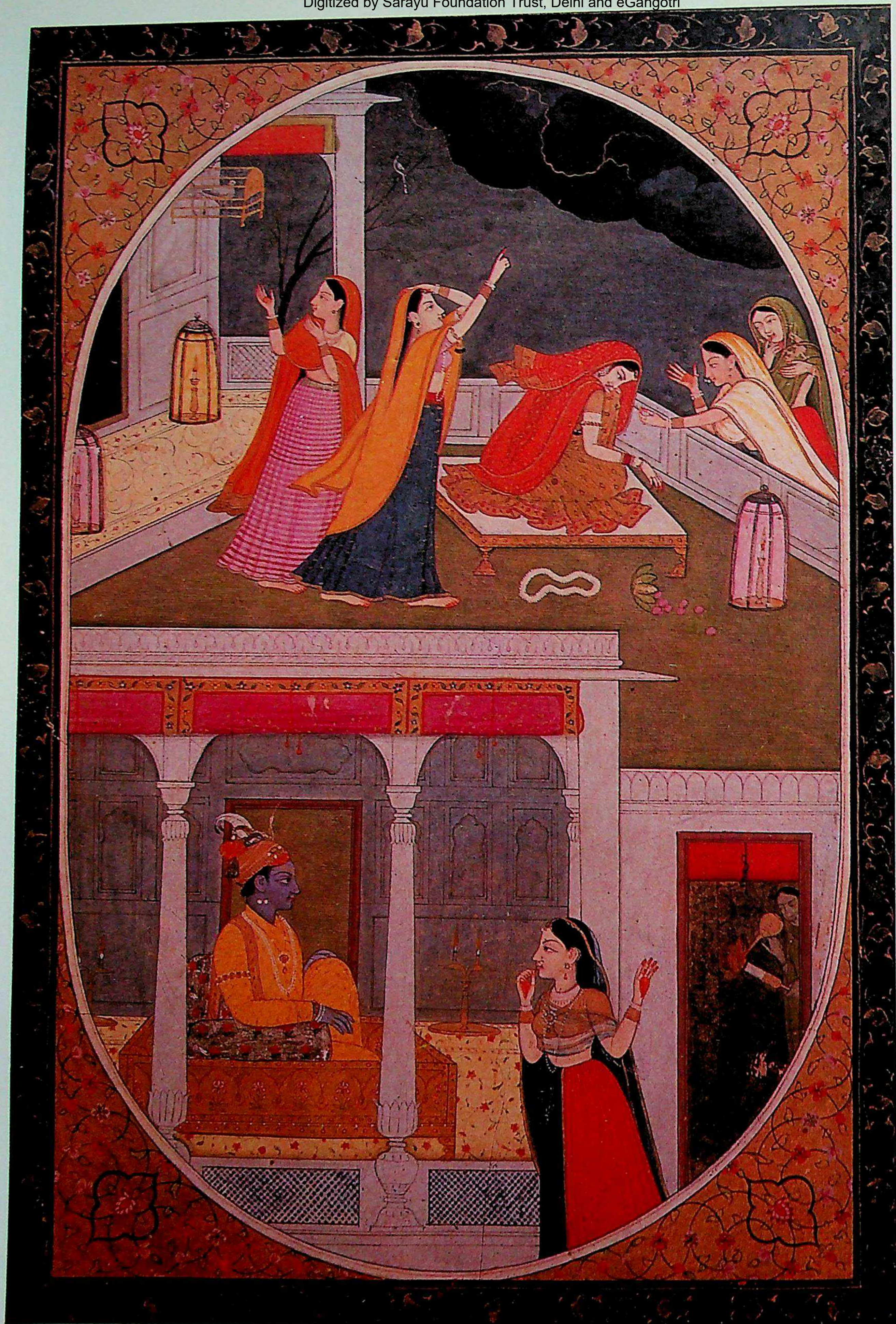
भौंरिनी ज्यों भवँत रहति बन बीथिकानि,
हंसिनी ज्यों मृदुल मृनालिका बहति है ।
पीउ पीउ रटति रहति चित चातकी ज्यों,
चंद चितै चकई ज्यों चुप ह्वै रहति है ।
हरिनी ज्यों हेरति न केसरि के काननहि,
केका सुनि ब्याली ज्यों बिलानहीं चहति है ।
केसव कुँवर कान्ह बिरह तिहारे ऐसी,
सूरति न राधिका की मूरति गहति है ।१७।

दीरघ दरीनि बसैं केसौदास केसरी ज्यों,
केसरी कों देखि बनकरी ज्यों कपत हैं ।
बासर की संपदा उलूक ज्यों न चितवत,
चकवा ज्यों चंद चितै चौगुनो चपत हैं ।
केका सुनि ब्याल ज्यों बिलात जात घनस्याम,
घननि की घोरनि जवासे ज्यों तपत हैं ।
भौंर ज्यों भँवत बन जोगी ज्यों जगत निसि,
साकत ज्यों स्याम नाम तेरोई जपत हैं ।१८।

केसवदास प्रवास को, कह्यो जथामति साज ।
राधा-हरि बाधाहरन, बरनौं सखी-समाज ।१९।



विरही राधा, कांगड़ा, लगभग 1800 ई०, राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली



मानिनी राधा, कांगड़ा, लगभग 1825 ई०, राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

बारहवाँ प्रकाश

सखी वर्णन

धाइ, जनी, नाइन, नटी, प्रगट परोसिनि नारि ।
मालिनि, बरइनि, सिल्पिनी, चुरिहेरनी, सुनारि ।१।

रामजनी, सन्यासिनी, पटु पटुवा की बाल ।
केसव नायक नायिका, सखी करहिं सब काल ।२।

पहली सखी धाइ का वचन--प्रिया से

मोहन-साथ कहा निसिद्योस रहै सतरंजहि के मिस बैठी ।
केसव क्योंहूँ सुनै महतारी तौ राखहि री घर ही मह पैठी ।
हौं सिखऊँ सुखदै सिख तोहि तैं भौंह चढ़ाइ कै डीठि अनैठी ।
को न लड़ैती सरूप न काहि तुहीं कछु जाति अकासहिं ऐंठी ।३।

धाइ की दूसरी बातें--प्रियतम के प्रति

थोरी सी सुदेस बैस दीरघ नयन केस,
गौराजू सी गोरी भोरी भवजू की सारी सी ।
साँचे की सी ढारी अति सूछम सुढार कटि,
केसौदास अंग अंग भाँइकै उतारी सी ।
सोंधे कैसी सोंधी, देह सुधा सों सुधारी पाइ,
धारी देवलोक तें कि सिंधु तें उधारी सी ।
आजु यासों हँसि खेलि बोलि चालि लेहु लाल,
कालि ऐसी ग्वालि लाऊँ काम की कुमारी सी ।४।

दूसरी सखी-दासी का वचन-प्रिया के प्रति

सोभा को सघन बन मेरो घनस्याम नित,
नई नई रुचि तन हेरत हिराइयै ।
केसौदास सकल सुबास को निवास, करि
बिबिध बिलास हास, त्रास बिसराइयै ।
ऊँख-रस केतक महूख-रस मीठो है,
पियूखहू की पैली घाँ है जाको नियराइयै ।
चोरी-चोराँ नैननि चुराएँ सुख कौन जौ लौं,
पिय-मन माहिं मन मेलि न चराइयै ।५।

दासी का वचन-प्रियतम के प्रति

ऐसी बातैं ऐसे ही धौं कैसैं कै कही परति,
जाकी गति मति लाज-पट सों लपेटी हैं ।
मेरें ही न आवै, मेरी बीर एती बेर वे तौ,
जानति हौं धाइ ही के साथ लौटि लेटी हैं ।
ऐसी तौ है चेरिन की चेरी वाकी केसौदास,
जैसी तुम हाहा करि पाइ परि भेटी हैं ।
जानति हौं नंदजू के ढोटा हौर जू, जानो बोल,
उतहिं वेऊ तौ बृषभानजू की बेटी हैं ।६।

तीसरी सखी-नाइनि का वचन-प्रिया के प्रति

अब ही तौ गए उठि पौरहूँ लौं न पै बोलन जाहि री पींछहीं लागें ।
करिहौ तब कैसी पराए जू ढोटहि ह्वैहै कछू निसिद्योस के जागें ।
जौ न रह्यो परै केसव कैसहुँ देखत ही मुख स्याम सभागें ।
देती हौ जान क्यों राखत काहे न आरसीयै करि आँखिन आगें ।७।

नाइनि का वचन-प्रियतम के प्रति

बड़ी जिस लाज, बड़ो डर आली बड़ी लहुरीयौ चलैं चित लीने ।
बड़ी बड़ी आँख बड़ी छबि सों चितवै बड़ी बेर बड़ो सुख दीने ।
बड़े ही बिचार बड़ी रुचि केसव क्योंहूँ मिलै तौ मिलै हमही ने ।
बड़ीनिहूँ सों तौ बड़े दुख बोलै, इते बड़े मान बड़ो मन कीने ।८।

चौथी सखी-नटी का वचन-नायिका के प्रति

जौ हौं दिखावन तोहि गई री तैं मेरियै ग्रीवैं गही फिरि माई ।
आजु कहा दिखसाध लगी है दिखाऊँगी जाइ तौ वेई कन्हाई ।
देखे तें सीरी ह्वै जाति भटू अनदेखें जरै तुँ यहै अधिकाई ।
राति की वे गति द्योस की ये अब हौं तेरी बातनि बाजहि आई ।९।

नटी का वचन-नायक के प्रति

जहीं जहीं दुरै तहीं जोन्ह ऐसी जगमगै,
कैसेंहूँ जू केसव दुराऊँ लियें रंग की ।
पवन के पंथ अलि अलिनि के पीछैं आली,
अलिनी ज्यों लागी फिरैं जिन्हैं साध संग की ।
निपट अमिल वह तुम्हैं मिलिबें की जक,
कैसें कै मिलाऊँ गति मौ पै न बिहंग की ।
इक तौ दुसह दुख देति हुती दुति, दूजें
बीसबिसे बिष भई बास वाके अंग की ।१०।

पाँचवीं सखी-पड़ोसिन का वचन-नायिका के प्रति

पाइ परें पलिका परस्यो सु लगी रति तोलन मेलि रती हो ।
सौंहें कियें मुँह सौंहों कियो अब लौं तुम पै गति ऐसी न ती हो ।

केसव कैसहुँ देखन कौं तिन्हैं भोरहीं भोरी ह्वै आनि दती हो ।
पान खवावतहीं तिन सों तुम राति कहा सतराति हती हो ।११।

पड़ोसिन का वचन-नायक के प्रति

हाँसी में बातक वासों कही हँसि वेहूँ कही सु हितै करि लेख्यो ।
आँखैं मिली न मिली सखियाँ मिलबोई सु केसव क्यों अवरेख्यो ।
चिच्याइ मरै चुप साधै कि चातक स्वाति समै ही स्रवै सु बिसेख्यो ।
आजुहीं क्यों वह आवै यहाँ जिनि आगि लगेंहूँ न आँगन देख्यो ।१२।

छठी सखी-मालिन का वचन--नायिका के प्रति

दुरिहै क्यों भूषन बसन दुति जोबन की,
देह ही की ज्योति होति द्योस ऐसी राति है ।
नाह को सुबास लागें ह्वैहै कैसी केसव,
सुभाव ही की बास भौंर-भीर फारे खाति है ।
देखि तेरी सूरति की मूरति बिसूरति हौं,
लालन को दृग देखिबे कों ललचाति है ।
चलिहै क्यों चंदमुखी कुचनि के भार भएँ,
कचनि के भार तौ लचकि लंक जाति है ।१३।

मालिन का वचन-नायक के प्रति

घेरौ जिनि मोहि घर जान देहु घनस्याम,
घरिक में लागी उर देखिबी ज्यों दामिनी ।
होइ कोऊ ऐसी वेसी आवै इत उत ह्वैकै,
वह बृषभानजू की बेटी गजगामिनी ।
आदित को आयो अंत आवौ बलि बलि जाउँ,
आवती हैं वेऊ बनी, आई बनि जामिनी ।
काम के डरनि तुम कुंज गह्यो केसौदास,
भौंरन के भय भौन गह्यो उनि भामिनी ।१४।

सातवीं सखी-बरइनि का वचन-नायिका के प्रति

मैन ऐसो मन मृदु मृदुल मृनालिका के,
सूत ऐसी सुरधुनि मनहि हरति हैं ।
दार्‍यो कैसे बीज दाँत, पान से अरुन ओठ,
केसौदास देखे दृग आनँद भरति हैं ।
एरी मेरी तेरी मोहिं भावति भलाई तातें,
बूझति हौं तोहि और बूझत डरति हैं ।
माखन सी जीभ, मुख कंज सो कोवँर, कहु
काठ सी कठेठी बातैं कैसे निकरति हैं ।१५।

बरइनि का वचन-नायक के प्रति

नैननि नवावौ नेक अति ही अनीति करें,
जानति न तुम जैसें ब्रज जानियत हैं ।
चंचल चरित्र चित्त, चेटक चटकि लावौ,
चेरे कै चितनि अभिसार सौंपियत हैं ।
एकनि के पैठे उर, उररि उरोजन में,
डर डोलैं केसौदास कैसें वै जियत हैं ।
ऐसी कहूँ होति है जो बालनि के चोरि चोरि,
मन मनमथ ही के हाथ बेचियत हैं ।१६।

आठवीं सखी-शिल्पिनी का वचन-प्रिया के प्रति

अबहीं पुनि बोलि री बोलि लगी जक पौरिहूँ लौं उठि जान न दीने ।
मेरे ही जान भई उलटी तुमहीं बस केसव वे कहँ कीने ।
जौ तौ इतौ दुख पावति हौ तलफैं दृग मीन मनों जल झीने ।
तौकत छाड़ति हौ छिन एक रहौ किनि चित्र ज्यों हाथहिं लीने ।१७।

शिल्पिनी का वचन-प्रियतम के प्रति

खोट तुरी जिमि खूँट रहौ गहि ठौर कुठौरनि जानिहू जाहू ।
लाज के आवति मारे समाजन लागें अलोक के ताजन ताहू।
कोरि बिचार बिचारहु केसव दुखहु बूझि हितू सब काहू ।
नेह ही के फिरि लागिहौ संग न नैननि के सँग ओरनिबाहू ।१८।

नौवीं सखी-चुरिहेरिन का वचन-प्रिया के प्रति

मन मन मिलें कहा मिलिहै मिले को सुख,
मिलिहू धौं देखहु बोलाइ काहू बाल सों ।
भूलि परे भौंहनिहीं बाँधिहौ कितेक दिन,
बाँधौ बलि जाउँ बनमाली बनमाल सों ।
मुँह मोरें मारें न मरति रिस केसौदास,
मारहु धौं मेरे कहें कमल सनाल सों ।
नैननिहीं बिहँसि बिहँसि कौ लौं बोलिहौ जू,
कबहूँ तौ बोलियै बिहँसि मुख लाल सों ।१९।

चुरिहेरिन का वचन-नायक के प्रति

आपुन हूजै दुखी दुख जाके सु ताहि कहा कबहूँ दुख दीजै ।
जा बिन और सुहाइ न केसव ताहि सुहाइ सु तौ सब कीजै ।
भाग बड़े जु रची तुमसों वह तौ बिझकाइ कहौ कह लीजै ।
जौ रिस जाइ तौ जैयै मनावन तातो है दूध सिराइ तौ पीजै ।२०।

दसवीं सखी-सुनारिन का वचन-नायिका के प्रति

लोल अमोल कटाछ कलोल अलोलिक सों पट ओलि कै फेरे ।
पानिप सों अति पैने रसाल बिसाल बने मनभावते मेरे ।
केसव चीकने चौगुने चोखे चितै कै भए हरि न्यायनि चेरे ।
सोच-सकोचन श्रीरति-रोचन धीरज-मोचन लोचन तेरे ।२१।

सुनारिन का वचन-नायक के प्रति

हाँसी में हँसे तें हरि हरें कै झुकति मन-
हारि कै हँसति हेरि हियें अनुरागी है ।
प्रेम की पहेली गूढ़ जानत जनावतहीं,
आजु अधरातक लौं मेरे संग जागी है ।
अब लौं ज्यों धरी धीर तैसें दिन द्वैक और,
धरौ गिरिधर तुमतें को बड़भागी है ।

भावती तिहारी वह काल्हि ही तें केसौराय,
काम की कथान कछु कान देन लागी है ।२२।

ग्यारहवीं सखी-रामजनी का वचन - नायिका के प्रति

कोमल कमल वे तो अमल ये तिक्ष चल,
मलिन नलिन नवनील के से पात हैं ।
सूधे साधु सुद्ध वे तौ कुटि प्रसिद्ध ये तौ,
केसव मरम-चोर परम किरात हैं ।
पाइहैं पकरि तब पाइहै न कैसेंहू तूँ,
थोरो इठलाति ये तौ अति इठलात हैं ।
बरजति क्यों न तो सों कब की कहति, मेरे
मोहन के मनै तेरे नैन छ्वै छ्वै जात हैं ।२३।

रामजनी का वचन - नायक के प्रति

कौनहूँ तोष कहा भयो केसव कामिनि कोटिक सों हित ठाटें ।
रंच न साध सधै सुख की बिन राधिकै आधिक लोचन डाटें ।
क्यों खरी सीतल बास करै मुख जौ भखियै घनसार के साटें ।
लालच हाथ रहै ब्रजनाथ पै प्यास बुझाइ न ओस के चाटें ।२४।

बारहवीं सखी-संन्यासिनी का वचन - नायिका के प्रति

छुटै न छुटाएँ जब करिहौ धौं कैसी बात,
केसौदास अनयास प्यास भूख भागिहै ।
खेल भूलि जाइगो जुड़ाइगो न चित्त चेति,
कछु ना सुहाइगो री रैनिदिन जागिहै ।
ताते तें तपति दूनी सीरे तें सहस गुनी,
उपजि परैगी उर ऐसी और आगि है ।
ऐंड सों ऐंडाइ जिन अंचल उड़ात, ओली
ओड़ति हौं काहूँ की जु डीठि उड़ि लागिहै ।२५।

संन्यासिनी का वचन - नायक के प्रति

सीतलहू हीतल तिहारें न बसति वह,
तुम न तजत तिल ताको उर ताप-गेहु ।
आपनो ज्यौ हीरा सो पराएँ हाथ ब्रजनाथ,
दैकै तौ अकाथ हाथ मैन ऐसो मन लेहु ।
एते पर केसौदास तुम्हैं न प्रवाह वाहि,
वहै जक लागी भागी भूख सुख भूल्यो देहु ।
माड़ौ मुख छाड़ौ छिन छल न छबीले लाल,
ऐसी तौ गँवारिन सों तुमहूँ निबाहौ नेहु ।२६।

तेरहवीं सखी-पटइनि का वचन - नायिका के प्रति

याही कों मेरी गुसाईंनि मैं मिलई पहिलें बतियाँ छलि छैलो ।
बातैं मिलै अँखियाँ मिलई सखियान की आँखिनि पारि कै ऐलो ।
आँखि मिले मुँह लागि रहै मन लेहु मिलै ब गहैं हम गैलो ।
मिले मन माई कहा करिहौ मुँह ही के मिलें तौ कियो मन मैलो ।२७।

गेह की नेह की देह की दीबे की भूषन की जिन भूख भगाई ।
मोहिं हँसी-दुख दोऊ दई तिनहीं सों जनावति है चतुराई ।
केसवदास बड़ाई दई तौ कहा भयो जाति-सुभाव न जाई ।
सोने सिँगारहु सोंधे चढ़ावहु पीतर की पितराई न जाई ।२८।

पटइनि का वचन-नायक के प्रति

वा मृगनैनी ज्यों औरनहीं जु लगावत हौ मुँह ऐसे न हूजै ।
सोनेंई सी सुनपीतर होइ तौ केसव कैसहुँ हाथ न छूजै ।
आप गिरा गुन जौ सिखवै तऊ काक न कोकिल ज्यों कल कूजै ।
सुंदर स्याम बिराम करौ कछु आम की साध न आमिली पूजै ।२९।

बैन ऐन-सुख मैन करि, कहे सखिनि के धर्म ।
केसव कहौं कछूक अब, तिनके कोबिद कर्म ।३०।

तेरहवाँ प्रकाश

सखीजन कर्म वर्णन

सिक्षा, बिनय, मनाइबो, मिलवै करि सिंगार ।
झुकि अरु देइ उराहनो, यह तिनको ब्योहार ।१।

शिक्षा - नायिका के लिए

नाह लगें मुख सौति दहैं दुख, 'नाहिं' लगें दुख देह दहैगो ।
नाहीं अबै सुख देति है केसव, नाह सदा सुख देत रहैगो ।
नाहीं तें नाहीं री नाहीं भलाई, भली सब नाह ही तें पै कहैगो ।
नाह सों नेह निबाहि बलाइ ल्यौं, नाहीं सों नेह कहा निबहैगो ।२।

शिक्षा - नायक के लिए

कुंकुम उबटि कुमकुमा के न्हवाइ जल,
सोंधो सिर लाइ याहि लाए कहा रास में ।
चंदन चढ़ाइ फूल माल पहिराइ भूलि,
बेही काज आँजि माँजि कीनी है प्रकास में ।
केसव कपूर पूरि काहे कौं खवावौ पान,
जौ पै मन मगन है ऐसे ही बिलास में ।
वाहि न मनावौ हरि हाहा करि पाइ परि,
सब ही सुबास बसै जाके मुखबास में ।३।

विनय - नायिका के प्रति

ऐसेंही क्यों चुप ह्वै रहिहौं सखि हौं सहिहौं सतराहट सौं लौं ।
क्यों सरिहै मिलिबे बिन तोहि तऊ मिलियै मिलियै दिन जौ लौं ।
केसव कोरि करौ उपचार मिलै को कहा मिलिहै सुख तौ लौं ।
देखि धौं अंगनि आरसी लै मिलिहै पिय सों मन ही मन कौ लौं ।४।

विनय - नायक के लिए

कंज कैसे फूल नैन दार्‍यौं से दसन ऐन,
बिंब से अधर, हास सुधा सो सुधार्‍यो है ।
बेनी पिकबैनी को त्रिबेनी सी बनाइ गुही,
बार कै सेवार करिहाँ कों करि हार्‍यो है ।
कीने कुच अमल कलपतरु के से फल,
केसौदास यातें बिधि मुगध बिचार्‍यो है ।
देखौ न गुपाल सखी मेरी को सरीर सब,
सोने सों सँवारि सब सोंधे सों सँवार्‍यो है ।५।

'नाहीं' सिखाबति नाहीं भली सखि पावक सों तिनको मुँह डाढ़ौ ।
भौंहनि के भुलवौ भटू भावनि नैननि के मत सों हित बाढ़ौ ।
कालि तें कालि कै होन दई हँसी, पाइ परौं न परौ मुँह काढ़ौ ।
राज करौ यह राज सदा रहै केसव चित्र ज्यों आगे ही ठाढ़ौ ।६।

मनाना - नायिका को

रीझि रिझाइ झरोखनि झाँकि रही मुख देखि दिखाइ सुभाहीं ।
बोलन आएँ अबोली भई अब केसव ऐसी हमैं न सुहाहीं ।
मैं बहुतै बहराई हैं तो सी री तू बहरावति मोहिं बृथाहीं ।
एहीं समान सदा चलिहौ हरि सों हँसि 'हाँ' करै मोहीं सों नाहीं ।७।

मनाना - नायक को

भूषन-भेद बनाइकै केसव फूल बनाई बनाइकै बागे ।
भाग बढ़ाइ सुहाग बढ़ाइकै राग बढ़ाइ हियें अनुरागे ।
पाइनि लागत सोंधो चढ़ावत पान खवावतहीं निसि जागे ।
कान्ह चलौ उठि बैठे कहा? मन मूसि परायो ब रूसन लागे ।८।

मिलाना - नायिका को

दुर्लभ देवनिहूँ कों सु तौ हरि को मन हाँसिन ही हरि लीनो ।
टारहु जैं हिय तें कबहूँ अब ज्यों गुरु को दियो मंत्र प्रबीनो ।
लेत लियो तौ न देत दियो अब मानहु ता दिन दुख्ख नवीनो ।
माँगन आवै तौ दीजै भटू अपनो मन, जौ वह जाइ न दीनो ।९।

आजू देवारि की राति जौ कीजै तौ आजु के द्योस लौं ह्वैहै सभागी ।
बात सुनी जननी पै जबै तब ही मति मान की नींद तें जागी ।
अंग सिंगारि निहारि निसा तिन चित्तबिहारनि सों अनुरागी ।
दीप दै देवनि जाइ जुवा मिलि केसवराय सों खेलन लागी ।१०।

जौ हौं गनौं औगुननि तो तूँ गनै गुनगन,
जौ हौं गनौं गुन तौ तूँ औगुन के गन में ।
केसौदास ऐसें प्रीति छिपावति छलनि में,
जैसें छनछबि छूटै छिपै जाइ घन में ।
भारी है निठुर निसि भादों की भयावनी में,
सु क्यों बसै घर जाको पीउ बसै बन में ।
बैठे तें उठावै, उठि चले तें मचलि रहै,
सोई मेरी क्यों न कहै जोई तेरे मन में ।११।

मिलाना - नायक को

सिखै हारी सखी डरपाइ हारी कादंबिनी,
दामिनी दिखाइ हारी दिसि अधरात की ।

झुकि झुकि हारी रति मारि मारि हार्‍यो मार,
हारी झकझोरति त्रिबिध गति बात की ।
दई निरदई दई याहि काहे ऐसी मति,
जारति जु रैनदिन दाह ऐसे गात की ।
कैसेंहूँ न मानै हौं मनाइ हारी केसौराय,
बोलि हारी कोकिला बुलाइ हारी चातकी ।१२।

शृंगार - नायिका का

दीनो मैं पाई झँवाइ महावर आँज्यो मैं आँजन आँखि सुहाई ।
भूषन भूषित कीने मैं केसव माल मनोहर मैं पहिराई ।
दर्पन लै अब दीपति देखि सखी, सब अंग सिँगारि सिधाई ।
बंक बिलोकनि, अंक लै पान खवावै को कान्ह-कुमार की नाई ।१३।

शृंगार - नायक का

पाय बनी अरु बागो बन्यो पटआ पटुका कटि राजत नीको ।
सोंधो बन्यो अति चारु चढ़ावत हार बन्यो उर भावतो जी को ।
बीरा बन्यो मुख खात मनोहर, मोहिं सिँगार लग्यो सब फीको ।
भाल भली बिधि जौ लौं गुपाल कियो उहिं बाल बनाइ न टीको ।१४।

झुकाना - नायिका को

फिरि फिरि फेरि फेरि फेर्‍यो मैं हरी को मन,
मन फेरें फिरी पुनि भाग की भली घरी ।
पल पल पाइनि परति हुती जिनकें सु,
पार्‍यो पीय तेरें पाइ पी के पाइ हौं परी ।
बड़िनि की बेटिनि की बड़ीयै बड़ाई मेटि,
केसौदास बड़ेन में जौ तूँ हौं बड़ी करी ।
हौं तौ जानी मनाएँ तें मेरो गुन मानिहैं, मैं
ताहि क्यों मनाई तैं जु मोहीं सों मनी धरी ।१५।

केसवराय बुलावत है चित चारु बिलोचन नीचे करौ जू ।
कालि करै बर एक बिसौ परौं बीस बिसे ब्रत तें न टरौ जू ।
आगि लगै तेरे कालि के सीस, परौं पर जाइ बजागि परौ जू ।
आज मिलौ तौ मिलौ ब्रजराजहि नाहिं तौ नीके ह्वै राज करौ जू ।१६।

झुकाना - नायक को

तासो बसाइ कहा कहि केसव कामलता तरु तेंदु रई ।
बिधि की लिपि लोपी न जाइ अमोलिक लै मनि सीस भुजंग दई ।
अपनो मुख देखहु आरसी लै पुनि बात कहौ परमान-लई ।
बृषभान-सुता पर और सुहागिल बाउ कहाँ लगि जीभ गई ।१७।

उलाहना - नायिका को

केसौदास कौन बड़ो रूप, कुलकानि पै
अनोखो एक तेरेहीं अनख उर ओलियै ।
आपनें सयान काहू मानसै न मानै तूँ,
गुमान के बिमान बैठि ब्योम ब्योम डोलियै ।
ऐंड सों ऐंडाइ अति अंचल उड़ाइ ऐसी,
छांड़ि ऐंड बैंड चितवनि निरमोलियै ।
दीनो मन हाथ जिनि हीरा सो हरषि कै,
ता हरि सों हरिननैनी हरेहुँ तौ बोलियै ।१८।

उलाहना - नायक को

सौंहनि को सोच न सकोच काहू बीच की को,
पोंछौ प्यारे पीक-लीक लोचन किनारे की ।
माखन की चोरी की है थोरी थोरी मोहूँ सुधि,
जानति बिसेष वहै जोरी है जु बारे की ।
मेरियै कुमति और कहा कहौं केसौदास,
लागति है लाल लाज इहां पाइ धारे की ।
एती है झुठाई, वह अबहीं रुठाई, यह
छारहू तौ छूटी नाहिं पाइन के पारे की ।१९।

नायिका का वचन - सखी के प्रति

आँधी सी धाइ है, दाई दवारि सी, दासिन के दुख देह दही है ।
ताप के तूल तँबोलिनि, मालिनि, नाइनि नाह के नेह नहीं है ।
तेरी सौं तेरी सौं मेरी सखी सुनि तेरी अकेली की आस रही है ।
कान्ह मिलाउ कि मोहिं न पाइहै आपने जी की मैं तोसों कही है ।२०।

इहि बिधि स्याम-सिँगार-रस, बहु बिधि बरनो लोइ ।
चारि बरन चहुँ आश्रमनि, कहत सुनत सुख होइ ।२१।

राधा राधा-रमन के, कर्‍यो सिँगार सुबेष ।
रस आदिक आगे कहौं, और रसनि को भेष ।२२।

चौदहवाँ प्रकाश

रसों का वर्णन (शृंगार के अतिरिक्त)

हास्य-रस का लक्षण

नयन नयन कछु करत जब, मन को मोद उदोत ।
चतुर चित्त पहिचानियै, तहाँ हास्यरस होत ।१।

हास्य-रस के भेद

मंदहास कलहास पुनि, कहि केसव अतिहास ।
कोबिद कबि बरनत सबै, अरु चौथो परिहास ।२।

मन्दहास का लक्षण

बिगसहिं नयन, कपोल कछु, दसन, दसन के बास ।
मंदहास तासों कहत, कोबिद केसौदास ।३।

बरनत बाढ़ै ग्रंथ बहु, कहे न केसवदास ।
औरौ रस यों जानियो, सबै प्रछन्न प्रकास ।४।

नायिका का मन्दहास

भेद की बात सुने तें कछू वह मासक तें मुसुक्यान लगी है ।
बैठति है तिनमें हठिकै जिनकी तुमसों मति प्रेमपगी है ।
जानति हौं नलराज दमैंती की दूतकथा् रसरंग रँगी है ।
पूजैगी साध सबै सुख की बड़भाग की केसव ज्योति जगी है ।५।

जानै को पान खवावत क्योंहूँ गई अँगुरी गड़ि ओठ नवीने ।
तैं चितयो तबहीं तिहिं रीति री लाल के लोचन लीलि से लीने ।
बात कही हरएँ हँसि केसव मैं समुझी वे महारस भीने ।
जानति हौं पिय के जिय के अभिलाष सबै परिपूरन कीने ।६।

नायक का मन्दहास

दसन-बसन माँझ दमकै दसन-दुति,
बरषि मदन-सर करत अचेत हौ ।
झाईं झलकति लोल लोचन कपोलनि में,
मोल लेत मन क्रम बचन समेत हौ ।
भौंहैं कहें देत भाउ सुनौ मेरी भावती के,
भावते छबीले लाल मौन कौन हेत हौ ।
केसव प्रकास हास हँसि कहा लेहुगे जू,
ऐसें ही हँसे तें तौ हिये कों हरे लेत हौ ।७।

कलहास का लक्षण

जहँ सुनियै कलध्वनि कछू, कोमल बिमल बिलास ।
केसव तन मन मोहियै, बरनहु कबि कलहास ।८।

नायिका का कलहास

काछें सितासित काछनी केसव पातुर ज्यों पुतरीनि बिचारौ ।
कोटि कटाछ नचै गतिभेद नचावत नायक नेह निनारौ ।
बाजत है मृदुहास मृदंग सु दीपति दीपनि को उजियारौ ।
देखत हौ हरि देखि तुम्हैं यह होत है आँखिन ही में अखारौ ।९।

प्रेम घने रस-बैन सने गति नैननि की सर-मैन भई ही ।
बाल-बहिक्रम-दीपति देह त्रिबिक्रम की गति लीलि लई ही ।
भौंहैं चढ़ाइ सखीनि दुराइ इतै मुसकाइ उतै चितई ही ।
केसव पाइहौ आजु भलें चित चोरि लै कालि गुवालि गई ही ।१०।

नायक का कलहास

आजु सखी हरि तोसों कछू बड़ी बार लौं बात कही रसभीनी ।
मेलि गरैं पटुका पुनि केसव हारि हियें मनुहारि सी कीनी ।
मोहिं अचंभो महा सु हहा कहि बाँह कहा बड़ी बार लौं लीनी ।
तैं सिर हाथ दियो उनिकें उनि गाँठि कहा हँसि आँचर दीनी ।११।

अतिहास का लक्षण

जहाँ हँसहिं निरसंक ह्वै, प्रकटहिं सुख मुखबास ।
आधे आधे बरन पद, उपजि परत अतिहास ।१२।

नायिका का अतिहास

तैसीयै जगत ज्योति सीस सीसफूलनि की,
चिलकत तरुनि तिलक तेरे भाल को ।
तैसीयै दसन दुति दमकति केसौदास,
तैसोई लसत लाल लाल कंठमाल को ।
तेसीयै चमक चारु चिबुक कपोलनि की,
चमकत देखौ नकमोती चल चाल को ।
हरें हरें हँसि नेक चतुर चपलनैनि,
चित्त चकचौंधे मेरे मदनगुपाल को ।१३।

नायक का अतिहास

गिरि गिरि उठि उठि रीझि रीझि लामें कंठ,
बीच बीच न्यारे होत छबि न्यारी न्यारी सों ।
आपुस में अकुलाइ आधे आधे आखरनि,
आछी आछी बात कहैं आछी एक यारी सों ।

सुनत सुहाइ सब समुझि परै न कछू,
केसौदास की सौं दुरि देखे मैं हुस्यारी सों ।
तरनि-तनूजा-तीर तरबर-तर ठाढ़े,
तारी दै दै हँसत कुँवर कान्ह प्यारी सों ।१४।

परिहास का लक्षण

जहँ परिजन सब हँसि उठैं, तजि दंपति की कानि ।
केसव कौनहुँ बुद्धिबल सो परिहास बखानि ।१५।

नायिका का परिहास

आई है एक महाबन तें तिय गाबति मानो गिरा पगु धारी ।
सुंदरता जनु काम की कामिनि बोलि कह्यो बृषभानदुलारी ।
गोपिकै ल्याइ गुपालहि वै अकुलाइ मिलीं उठि आदर भारी ।
केसव भेंटत ही भरि अंक हँसीं सब कीक दै गोपकुमारी ।१६।

नायक का परिहास

सखि बात सुनौ इक मोहन की निकसी मटुकी सिर री हलकै ।
पुनि बाँधि लई सुनियै नतनारु कहूँ कहूँ बुंद करी छलकै ।
निकसीं उहि गैल हुते जहँ मोहन, लीनी उतारि जबै चलकै ।
पतुकी धरी स्याम खिसाइ रहे उत ग्वारि हँसी मुख आँचल कै ।१७।

करुण रस का लक्षण

प्रिय के बिप्रिय करन तें, आनि करुनरस होत ।
ऐसो बरन बखानियै, जैसे तरुन कपोत ।१८।

नायिका का करुण रस

तेज सूर से अपार, चंद्रमा से सुकुमार,
संभु से उदार उर उर धरियत है ।
इंद्रजू से प्रभु पूरे, रामजू से रनसूरे,
कामजू से रूप रूरे हिय हरियत है ।
सागर से धीर गनपति से चतुर अति,
ऐसे अबिबेक कैसें दिन भरियत है ।
नंद मतिमंद महा जसुदा सों कहौं कहा,
ऐसे पूत पाइ पसुपाल करियत है ।१९।

नायक का करुण रस

चंपे की सी कली भली केसव सुबास भरी,
रूप की सी मंजरी मधुर मन भाइयै ।
बेद की सी बानी, अति बानी तें सयानी, देव-
राय की सी रानी जानी जग सुखदाइयै ।
काम की कला सी, चपला सी, कामअबला सी,
कमला सी देह धरें पूरे पून्य पाइयै ।
कौनें कीनी निपट कुचालि जाति ग्वालि ऐसी,
राधिका कुँवरि पर गोरस बिचाइयै ।२०।

रौद्र रस का लक्षण

होहि रौद्ररस क्रोधमय, बिग्रह उग्र सरीर ।
अरुन बरन बरनत सबै, कहि केसव मतिधीर ।२१।

प्रिया जी का रौद्र रस

केहरी कपोत करि केर मृग मीन फनि,
सुक पिक कंज खंजरीट बन लीनो है ।
मृदुल मृनाल बिंब चंपक मराल बेल,
कुंकुम दाड़िम कहै दूनो दुख दीनो है ।
जारत कनक तन तनक तनक ससि,
घटत बढ़त बंधुजीव गंधहीनो है ।
केसौदास दास भए कोबिद कुँवर कान्ह,
राधिका कुँवरि कोप कौन पर कीनो है ।२२।

नायक का रौद्र रस

मींडि मार्‌यो कलह, बियोग मार्‌यो बोरिकै,
मरोरि मार्‌यो अभिमान भार्‌यो भय भान्यो है ।
सबको सुहाग अनुराग लूटि लीनो दीनो,
राधिका कुँवरि कहँ सब सुख सान्यो है ।
कपट कपटि डार्‌यो निपट कै औरनि सों,
मेटी पहिचानि मन में हू पहिचान्यो है ।
जीत्यो रतिरन मथ्यो मनमथहू को मन,
केसौदास कौन कहुँ रोष उर आन्यो है ।२३।

वीर रस का लक्षण

होहि बीर उत्साहमय, गौर बरन दुति अंग ।
अति उदार गंभीर कहि, केसव पाइ प्रसंग ।२४।

नायिका का वीर रस

गति गजराज साजि देह की दिपति बाजि,
हाव रथ भाव पत्ति राजि चली चाल सों ।
केसौदास मंदहास अति कुच भट भिरे,
भेट भए प्रतिभट भले नखजाल सों ।
लाज-साज कुलकानि सोच पोच भय भानि,
भौंहैं धनु तानि बान लोचन बिसाल सों ।
प्रेम को कवच कसि साहस सहायक लै,
जीत्यो रति-रन आज मदनगुपाल सों ।२५।

नायक का वीर रस

अघ ज्यों उदारिहौ कि बक ज्यों बिदारिहौ कि,
केस गहि केसौदास केसी ज्यों पछारिहौ ।
हरिहौ कि प्राननाथ पूतना के प्राननि ज्यों,
बन तें कि बनमाली काली ज्यों निकारिहौ ।
करिहौ बिमद घनबाहन ज्यों घनस्याम,
काहू सों न हारे हरि याही सों क्यों हारिहौ ।
बेही काम काम बर ब्रज की कुमारिकानि,
मारत है नंद के कुमार कब मारिहौ ।२६।

भयानक रस का लक्षण

होइ भयानक रस सदा, केसव स्याम सरीर ।
जाको देखत सुनतहीं, उपजि परति भयभीर ।२७।

नायिका का भयानक रस

भुवमंडल मंडित कै घनघोर उठे दिबिमंडल मंडि गटी ।
घहराति घटा घन बात के संघट घोष घटै न घटीहूँ घटी ।
दसहूँ दिसि केसव दामिनि देखि लगी प्रिय कामिनि कंठतटी ।
जनु पंथहि पाइ पुरंदर के बन पावक की लपटैं झपटी ।२८।

नायक का भयानक रस

रोष में रस के बोल बिष तें सरस होत,
जानै सो प्रबल पित्त दाखैं जिन चाखी हैं ।
केसौदास दुख दीबे लायक भए ब तुम,
आज लगि जाकी जी में आँखैं अभिलाषी हैं ।
सूधे ह्वै सुधारिबे कौं आए सिखवन मोहिं,
सूधेहूँ में सूधी बातैं मोसोंऊ न भाखी हैं ।
ऐसे में हौं कैसें जाउँ दुरिहूँ धौं देखो जाइ,
काम की कमान सी चढ़ाइ भौंहैं राखी हैं ।२९।

बीभत्स रस का लक्षण

निंदामय बीभत्सरस, नील बरन बपु तास ।
केसव देखत सुनतहीं, तन मन होइ उदास ।३०।

नायिका का बीभत्स रस

माता ही को माँस तोहिं लागत है मीठो मुख,
पियत पिता को लोहू नेक ना घिनाति है ।
भैयनि के कंठनि को काटत न कसकति,
तेरो हियो कैसो है जु कहति सिहाति है ।
जब जब होति भेंट तब तब मेरी भटू,
ऐसी सौंहैं दिन उठि खाति न अघाति है ।
प्रेतिनी पिसाचिनी निसाचरी की जाई है तूँ,
केसौदास की सौं कहि तेरी कौन जाति है? ।३१।

नायक का बीभत्स रस

टूटे ठाट घुनघुने धूम धूरि सों जु सने,
झींगुर छगोड़ी साँप बीछिन की घात जू ।
कंटककलित त्रिनबलित बिगंधजल
तिनके तलपतल ताको ललचात जू ।
कुलटा कुचीलगात अंधतम अधरात,
कहि न सकत बात अति अकुलात जू ।
छेंडी में घुसौ कि घर ईंधन के घनस्याम,
परघरनीनि पहँ जात न घिनात जू ।३२।

अद्भुत रस का लक्षण

होइ अचंभो देखि सुनि, सो अद्भुतरस जानि ।
केसवदास बिलासनिधि, पीत बरन बपु भानि ।३३।

नायिका का अद्भुत रस

केसौदास बाल बैस दीपति तरुन तेरी,
बानि लघु बरनत बुधि परमान की ।
कोमल अमल उर उरज कठोर, जाति
अबला पै बलबीर-बंधन-बिधान की ।
चंचल चितौनि, चित्त अचल, सुभाव साधु,
सकल असाधु भाव काम की कथान की ।
बेचति फिरति दधि, लेत, तिन्हैं मोल लेति,
अदभुतरस-भरी बेटी बृषभान की ।३४।

दूसरा उदाहरण

ब्रज की कुमारिका वै लीने सुक-सारिका,
पढ़ावैं कोक-कारिकानि केसव सबै निबाहि ।
गोरी गोरी भोरी भोरी थोरी थोरी बैस, फिरैं
देवता सी दौरी दौरी आई चोरा चोरी चाहि ।
बिन गुन तेरी आनि भृकुटी कमान तानि,
कुटि-कटाछ-बान यहै अचरज आहि ।
एते मान ढीठ ईठ तेरो को अदीठ मनु,
पीठ दै दै मारतीं पै चूकतीं न कोऊ ताहि ।३५।

नायक का अद्भुत रस

माखन के चोर मधु-चोर दधि-दूध-चोर,
देखै नाहिं देखतहीं चित्त चोरि लेत हैं ।
पुरुष पुरान अरु पूरन पुरान इन्हैं,
पुरुष पुरान सु कहत किहिं हेत हैं ।
केसौदास देखि देखि सुरनि की सुंदरी वै,
करतिं बिचार सब सुमति-समेत हैं ।
देखि गति गोपिका की भूलि जात निज गति,
अगतिन कैसें धौं परम गति देत हैं ।३६।

समरस (शांत रस) का लक्षण

सब तें होइ उदास मन, बसै एकहीं ठौर ।
ताही सों समरस कहैं, केसव कबि-सिरमौर ।३७।

नायिका का समरस

देखै नहीं अरबिंदनि त्यौं चित चंद की आनंदकंद निकाई ।
कामिनी कामकथा करै कान न ताकै त्रिधाम की सुंदरताई ।
देखि गई जब तें तुमकों तब तें कछु वाहि न देख्यो सुहाई ।
छोड़ैगी देह जु देखें बिना अहो देहु न कान्ह कहूँ ह्वै दिखाई ।३८।

नायक का समरस

खारिक खात न दारयौंइ दाख न माखनहूँ सहूँ मेटी इठाई ।
केसव ऊख महूखहु दूखत आई हौं तो पहँ छाँडि जिठाई ।
तो रदनच्छद को रस रंचक चाखि गए करि केहूँ ढिठाई ।
ता दिन तें उन राखी उठाइ समेत सुधा वसुधा की मिठाई ।३९।

दूसरा उदाहरण

दनुज मनुज जीव जल थल जननि को,
परयोई रहत जहाँ काल सों समरु है ।
अजर अनंत अज अमरौ मरत परि,
केसव निकसि जानै सोई तौ अमरु है ।
बाजत स्रवन सुनि समुझि सबद करि,
बेदन को बाद नाहिं सिव को डमरु है ।
भागहु रे भागौ भैया भागनि ज्यों भाग्यो परै,
भव के भवन माँझ भय को भँवरु है ।४०।

इहि बिधि बरन्यो बरन बहु, नवरस रसिक बिचारि ।
बाँधौं बृत्ति कबित्त की, कहि केसव बिधि चारि ।४१।



पंद्रहवाँ प्रकाश

वृत्ति वर्णन

वृत्ति के भेद

प्रथम कैसिकी भारती, आरभटी भनि भाँति ।
कहि केसव सुभ सात्वती, चतुर चतुर बिधि जाति ।१।

कौशिकी का लक्षण

कहियै केसौदास जहँ, करुण हास सिंगार ।
सरल बरन सुभ भाव जहँ, सो कैसिकी बिचार ।२।

उदाहरण

मिलिबे कौं एक मिली-मिली फिरैं दूतिकानि,
मिलि मन ही मन बिलास बिलसति हैं ।
बोलिबे कौं एक बाल बोल सुनिबे कौं एक,
बोलि बोलि तीरथनि ब्रतनि बसति हैं ।
देखिबे कौं एकै फिरैं देवता सी दौरि दौरि,
देवता मनाइ दिन दान मनसति हैं ।
कीजै कहा करम कों इहिं रूप मेरी माई,
ये तौ मेरे कान्हजू के नामहिं हँसति हैं ।३।

भारती का लक्षण

बरनिय जामें बीररस, अरु अदभुत रस हास ।
कहि केसव सुभ अर्थ जहँ, सो भारती प्रकास ।४।

उदाहरण

काननि कनकपत्र चक्र चमकत चारु,
धुजा झुलमुली झलकति अति सुखदाइ ।
केसव छबीलो छत्र सीसफूल सारथी सो,
केसरि की आड़ अधिरथिक रची बनाइ ।
नीकोई नकीब सम नीको नकमोती नाक,
एकही बिलोकनि गोपाल तौ गए बिकाइ ।
लोचन बिसाल भाल जरित जराऊ टीको,
मानो चढ़्यो मीनन के रथ मनमथराइ ।५।

आरभटी का लक्षण

केसव जामें रौद्ररस, भय बीभत्सहि जान ।
आरभटी आरंभ यह, पद पद जमक बखान ।६।

उदाहरण

घेरि घने घन घोरत सज्जल उज्जल कज्जल की रुचि राचैं ।
फूले फिरैं इभ से नभ पाइक सावन की पहली तिथि पाचैं ।
चौंहूँ कुघा तड़िता तड़पै डरपै बनिता कहि केसव साचैं ।
जानि मनो ब्रजराज बिना ब्रज ऊपर काल कुटुंबिनि नाचैं ।७।

सात्वती का लक्षण

अदभुत बीर सिँगाररस, समरस बरनि समान ।
सुनतहि समुझत भाव जिहिं, सो सात्वती सुजान ।८।

उदाहरण

केसौदास लाख लाख भाँतिनि के अभिलाष,
बारि दै री बावरी न बारि हिये होरी सी ।
राधा हरि केरी प्रीति सब तें अधिक जानि,
रति रतिनाथहू में देखौं रति थोरी सी ।
तिन माह भेद न भवानिहूँ पै पार्‍यो जाइ,
भानत में भारती की भारती है भोरी सी ।
एकै गति एकै मति एकै प्रान एकै मन,
देखिबे कों देह द्वै हैं नैननि की जोरी सी ।९।

इहिं बिधि केसवदास कबि, नब रस बरनि कबित्त ।
पाँच भाँति अनरस सुनौ, ताहि न दीजै चित्त ।१०।

सोलहवाँ प्रकाश

अनरस वर्णन

अनरस के पाँच प्रकार

प्रत्यनीक नीरस बिरस, केसव दुस्संधान ।
पात्रादुष्ट कबित्त बहु, करहिं न सुकबि बखान ।१।

प्रत्यनीक का लक्षण

जहँ सिँगार बीभत्स भय, बीरहि बरनै कोइ ।
रौद्र सु करुना मिलतहीं, प्रत्यनीक रस होइ ।२।

उदाहरण

हँसि बोलतहीं सु हँसै अब केसव लाज भगावत लोक भगै ।
कछु बात चलावत घैरु चलै मन आनतहीं मनमत्थ जगै ।
सखि तू जु कही सु हुती मन मेरेहु मन जानि यहै न हियो उमगै ।
हरि त्यौं टुक दीठि पसारतहीं अँगुरीन पसारन लोग लगै ।३।

नीरस का लक्षण

जहाँ दंपती मुँह मिलै, सदा रहै यह रीति ।
कपट करै लपटाय तन, नीरस रस की प्रीति ।४।

उदाहरण

गाहत सिंधु सयाननि के जिनकी मति की अति देह दहेली ।
मोहिं हँसी दुख दोऊ दई तिनहूँ सों जनावति प्रेम-पहेली ।
आजु लौं काननहूँ न सुनी सु तौ देखि चली हम सौति सहेली ।
जानी है जानी मिली मुँहहीं हिय नाहियै भावति गर्वगहेली ।५।

विरस का लक्षण

जहीं सोक महिं भोग को, बरनत है कबि कोई ।
केसवदास हुलास सों, तहीं बिरस रस होइ ।६।

उदाहरण

केसौदास न्हान दान खान पान भूल्यो ध्यान,
गयो ज्ञान भयो प्रान पीठि की सी पीठि है ।
छाँड़हु रसिक लाल यह जक वह बाल,
देखतहीं सब सुख तुमहीं उबीठि है ।
ऐसी सों बसीठी सीठी चीठी अति दीठी सुने,
मीठी मीठी बातनि जू नीकेहू में नीठि है ।
ईठनि सों टूटी ईठी ताके सोक की अँगीठी,
उठी जाके उर में सु कैसे हँसि डीठि है ।७।

दुःसंधान का लक्षण

एक होइ अनुकूल जहँ, दूजो है प्रतिकूल ।
केसव दुस्संधान रस, सोभित तहाँ समूल ।८।

उदाहरण

'दै दधि' 'दीनो उधार हो केसव' 'दान कहा जब माल लै खैहैं ।'
'दीने बिना' 'तौ गई जु गई' 'न गई न गई घर ही फिरि जैहैं ।'
'गो हित बैर कियो' 'कब हो हित बैर कियें बरु नीकी ह्वै रैहैं ।'
'बैर कै गोरस बेचहुगी' 'अहो बेच्यो न बेच्यो तौ ढारि न दैहैं ।९।'

पात्रादुष्ट का लक्षण

जेसी जहाँ न बूझियै, तैसो करियै पुष्ट ।
बिन बिचार जो बरनियै, सो रस पात्रादुष्ट ।१०।

उदाहरण

कपट-कृपानी मानी प्रेम-रस लपटानी,
प्राननि को गंगाजू के पानी सम जानियै ।
स्वारथ-निधानी परमारथ की राजधानी,
काम की कहानी केसौदास जग मानियै ।
सुबरन अरुझानी सुधा सों सुधारि आनी,
सकल-सयान-सानी ज्ञानी सुखदानियै ।
गौरा औ गिरा लजानी मोहे मुनि मूढ़ प्रानी,
ऐसी बानी मेरी रानी बिष कै बखानियै ।११।

परस्पर विरोधी रस

केसव करुना हास्य कहुँ, अरु बीभत्स सिँगार ।
बरनत बीर भयानकहि, संतत बैर बिचार ।१२।

रसों की उत्पत्ति का क्रम

भय उपजै बीभत्स तें, अरु सिँगार तें हास ।
केसव अद्‌भुत बीर तें, करुना कोप प्रकास ।१३।

इहिं बिधि केसवदास रस, अनरस कहे बिचारि ।
बरनत भूल परी जहाँ, कबिकुल लेहु सुधारि ।१४।

श्रुति फल

जैसे रसिक प्रिया बिना, देखिय दिन दिन दीन ।
त्यों ही भाषाकबि सबै, 'रसिकप्रिया' बिन हीन ।१५।

बाढ़ै रति मति अति परै, जानै सब रस रीति ।
स्वारथ परमारथ लहै, 'रसिकप्रिया' की प्रीति ।१६।





ISBN No. 81-230-0053-7





प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार